वर्ष : 16 अंक : 13 | प्रत्येक गुरुवार प्रकाशित | अनूपपुर 04 अप्रैल से 10 अप्रैल 2024 | मूल्य 2.00 | पृष्ठ 8 | Epaper-www.fatwasamachar.com

डाक पंजी-SDL-0019/2025 RNI-MPHIN/2008/24599

फतवा

मध्यप्रदेश एवं छतीसगढ का लोकप्रिय समाचार पत्र | आपका विश्वास

सुविचार

पहले वो आप पर ध्यान नहीं देंगे, फिर वो आप पर हँसेंगे, फिर वो आप से लड़ेंगे, और आप जित जायेंगे।'

संक्षिप्त समाचार

वायनाड से राहुल गांधी ने दाखिल किया नामांकन, बोले- यह चुनाव लोकतंत्र और संविधान के लिए लड़ाई है

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने बुधवार को केरल की वायनाड लोकसभा सीट से अपना नामांकन पत्र दाखिल किया। राहुल ने अपनी बहन प्रियंका गांधी और एआईसीसी महासचिव केसी वेणुगोपाल समेत पार्टी के अन्य वरिष्ठ नेताओं के साथ वायनाड जिला कलेक्टर को अपना नामांकन पत्र सौंपा, जो रिटर्निंग ऑफिसर भी हैं। कागजात जमा करने के बाद, उन्होंने संविधान को बनाए रखने की शपथ पढ़ी जिसके बाद कागजात जमा करने की प्रक्रिया समाप्त हुई। राहुल सुबह हेलीकॉप्टर से वायनाड पहुंचे और फिर अपना नामांकन जमा करने के लिए जिला कलेक्टर कार्यालय पहुंचने से पहले कलपेट्टा से सिविल स्टेशन तक रोड शो किया। इससे पहले कांग्रेस पार्टी के मौजूदा सांसद और उम्मीदवार राहुल गांधी ने कहा कि यह चुनाव लोकतंत्र और भारत के संविधान के लिए लड़ाई है। एक तरफ वो ताकतें हैं जो इस देश के लोकतंत्र को, इस देश के संविधान को खत्म करना चाहती हैं। वहीं दूसरी तरफ एक ताकत है जो संविधान की रक्षा कर रही है और हमारे देश के लोकतांत्रिक स्वरूप की रक्षा कर रही है। उन्होंने कहा कि आप सभी के लिए यह बिल्कुल स्पष्ट है कि कौन किस तरफ है। यह बहुत स्पष्ट है कि कौन संविधान पर हमला कर रहा है, कौन इस देश के लोकतांत्रिक ढांचे पर हमला कर रहा है। राहुल ने कहा कि मानव-पशु संघर्ष का मुद्दा है, मेडिकल कॉलेज का मुद्दा है। मैं इस लड़ाई में वायनाड के लोगों के साथ खड़ा हूं। हमने मेडिकल कॉलेज पर सरकार पर दबाव बनाने की कोशिश की है, मैंने सीएम को पत्र लिखा है। उन्होंने कहा कि लेकिन दुर्भाग्य से, वे आगे नहीं बढ़े हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि अगर दिल्ली में हमारी सरकार बनेगी और जब केरल में हमारी सरकार बनेगी, तो हम दोनों ऐसा करेंगे, हम इन मुद्दों का समाधान करेंगे।

दिल्ली सरकार में मंत्री आतिशी की बढ़ सकती हैं मुश्किलें, भाजपा ने भेजा मानहानि का नोटिस

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी की दिल्ली इकाई ने आम आदमी पार्टी की वरिष्ठ नेता आतिशी को मानहानि का नोटिस भेजा है और उनके इस दावे के लिए सार्वजनिक रूप से माफी मांगने की मांग की है कि भगवा पार्टी ने एक 'बहुत करीबी' व्यक्ति के माध्यम से उनसे इसमें शामिल होने के लिए संपर्क किया था। बुधवार को नई दिल्ली में एक संवाददाता सम्मेलन में, दिल्ली भाजपा प्रमुख वीरेंद्र सचदेवा ने कहा कि आतिशी को मानहानि का नोटिस भेजा गया है, जिसमें उनके दावे के लिए सार्वजनिक माफी की मांग की गई है। भाजपा नेता ने कहा ति आतिशी इस बात का सबूत देने में विफल रहीं कि उनसे किसने, कैसे और कब संपर्क किया। आम आदमी पार्टी दिल्ली में संकट के दौर से गुजर रही है, इसलिए हताशा में ऐसे बेबुनियाद आरोप लगा रही है। लेकिन हम उसे इससे दूर नहीं जाने देंगे। सचदेवा प्रमुख ने आतिशी को अपने दावे को साबित करने के लिए अपना फोन एक जांच एजेंसी को सौंपने के लिए कहा। दिल्ली की मंत्री आतिशी ने मंगलवार को कहा कि खुद सहित आप के चार वरिष्ठ नेताओं को जल्द ही गिरफ्तार किया जाएगा, उन्होंने दावा किया कि भाजपा ने एक 'बहुत करीबी' व्यक्ति के माध्यम से उनसे इसमें शामिल होने के लिए संपर्क किया था या एक महीने के भीतर ईडी द्वारा गिरफ्तार किए जाने के लिए तैयार रहें।

भाजपा के '400 से अधिक सीट' के नारे का उद्देश्य संविधान को बदलना है : गहलोत

नई दिल्ली। राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने मंगलवार को दावा किया कि भाजपा ने 'अबकी बार 400 पार' का नारा इसलिए दिया है क्योंकि वह संविधान में कई बदलाव करना चाहती है। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी पर संयुक्त राष्ट्र और जर्मनी की प्रतिक्रियाओं का हवाला देते हुए, गहलोत ने दावा किया कि लोकतंत्र का गला घोंटने के लिए दुनिया भर में भारत की आलोचना हो रही है। भाजपा द्वारा आरक्षण खत्म करने की आशंका जताते हुए गहलोत ने भगवान राम पर सत्तारूढ़ दल के ''एकाधिकार'' पर भी सवाल उठाया। गहलोत उम्मेद स्टेडियम में पार्टी के जोधपुर लोकसभा उम्मीदवार करण सिंह उचियारदा की नामांकन रैली को संबोधित कर रहे थे। इस मौके पर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा और अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महासचिव सचिन पायलट भी मौजूद थे। गहलोत ने आरोप लगाया कि भाजपा नेता हमेशा मतदाताओं को गुमराह कर और तथ्यों को तोड़-मरोड़ कर अपने पक्ष में माहौल बनाते हैं। गहलोत ने आरोप लगाया, ''भाजपा नेता नरेन्द्र मोदी और अमित शाह से इतने भयभीत हैं कि वे अपने क्षेत्रों की समस्याओं और मुद्दों को उन दोनों के साथ साझा नहीं करते हैं।''

दिल्ली शराब घोटाला: केजरीवाल की गिरफ्तारी के खिलाफ दायर याचिका पर सुनवाई पूरी

हाईकोर्ट ने सुरक्षित रखा फैसला

नई दिल्ली। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी के खिलाफ याचिका पर हाईकोर्ट में सुनवाई पूरी हो चुकी है। फिलहाल, फैसला सुरक्षित रख लिया गया है। केजरीवाल ने कथित शराब घोटाले से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग के मामले में अपनी गिरफ्तारी के खिलाफ याचिका दायर की। इसके बाद हाईकोर्ट ने ईडी से जवाब मांगा था। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने मंगलवार को अपना जवाब पेश किया।

केजरीवाल के वकील अभिषेक मनु सिंघवी अपना पक्ष रख रहे हैं। सिंघवी ने कहा कि केजरीवाल के खिलाफ पीएमएलए की धारा 50 के तहत कोई सामग्री नहीं है। ईडी ने पहला समन 30 अक्टूबर 2023 को भेजा गया है और 9वां समन 16 मार्च 2024 को भेजा गया। पहले और आखिरी समन के बीच छह महीने बीत गए। बिना किसी सबूत के केजरीवाल को गिरफ्तार कर लिया गया।

सिंघवी ने कहा कि यह केजरीवाल को लोकसभा चुनाव में अपनी पार्टी के उम्मीदवारों का प्रचार करने से रोकने के लिए ऐसा किया गया है। पहला वोट डाले जाने से पहले ही केजरीवाल और उनकी पार्टी को तोड़ने की कोशिश है। उनके पास कोई सबूत नहीं हैं, सिर्फ सरकारी गवाहों के बयान के आधार पर गिरफ्तार किया गया। रेड्डी को 10 नवंबर को गिरफ्तार कर लिया गया। उन्होंने 9 बयान दिए। 7 गिरफ्तारी से पहले और 2 गिरफ्तारी के बाद। ये हास्यास्पद है। जांच करने वाले कह रहे हैं कि जब तक आप केजरीवाल के खिलाफ बयान नहीं देंगे, हम बयान दर्ज करते रहेंगे।

ईडी ने केजरीवाल की गिरफ्तारी को चुनौती देने वाली याचिका का विरोध करते हुए कहा कि मामले में जांच शुरुआती चरण में है और जहां तक केजरीवाल का सवाल है, जांच खत्म नहीं हुई है। ईडी की तरफ से पेश हुए स्त्र राजू ने कहा कि मनी लॉन्ड्रिंग का जो अपराध हुआ है वह स्पष्ट और संदेह से परे है। अदालत ने पूर्व में दायर अभियोजन शिकायतों पर संज्ञान लिया है। संज्ञान अपराध का है, अपराधी का नहीं।

दिल्ली हाईकोर्ट में ईडी की ओर से पेश एएसजी एसपी राजू ने जवाब दाखिल करते हुए कहा कि आम आदमी पार्टी के चुनाव प्रचार के वेंडरों को मोटी रकम नगदी के रूप में दी गई। इसलिए किसी भी एकाउंट में इसकी जानकारी नहीं है। एएसजी एसवी राजू ने कहा कि याचिकाकर्ता की ओर से दी गई दलीलें इस तरह से दी गई हैं जैसे कि यह जमानत याचिका है न कि गिरफ्तारी को रद्द करने की याचिका है। ईडी ने केजरीवाल की गिरफ्तारी को चुनौती देने वाली याचिका का विरोध करते हुए कहा कि मामले में जांच शुरुआती चरण में है और जहां तक केजरीवाल का सवाल है, जांच खत्म नहीं हुई है।

उधर, ईडी ने मंगलवार को कोर्ट में दायर अपने जवाब में बताया कि आप ने अरविंद केजरीवाल के जरिए मनी लॉन्ड्रिंग की है और यह अपराध पीएमएलए की धारा 70 के तहत आता है। साथ ही ईडी की ओर से दायर जवाब में कहा गया कि आम आदमी पार्टी (आप) को शराब घोटाले से आए रुपयों का सबसे ज्यादा लाभ मिला। इन पैसों में से लगभग 45 करोड़ रुपये की नकदी का उपयोग गोवा विधानसभा चुनाव 2022 के दौरान आप के चुनाव अभियान में किया गया है। मुख्यमंत्री केजरीवाल ने मंगलवार दोपहर 1ः30 बजे वीडियो कांफ्रेंसिंग से पत्नी और परिवार के एक सदस्य से आधे घंटे तक बातचीत की। परिजनों ने उनकी तबीयत के बारे में जानकारी ली। केजरीवाल ने घर के अलावा दिल्ली के बारे में पूछा।

जाटलैंड में अमित शाह की हुंकार, यूपी से पलायन कर रहे गुंडे, अखिलेश ने किया था राम मंदिर का विरोध

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव को लेकर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने आज उत्तर प्रदेश में अपने अभियान की शुरूआत कर दी। भाजपा उम्मीदवार संजीव बालियान के लिए वोट मांगने के लिए मुजफ्फरनगर में एक सार्वजनिक बैठक को संबोधित करते हुए शाह ने कहा कि यह नरेंद्र मोदी सरकार थी जिसने लोगों की भावना का सम्मान किया और अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण किया। उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव अयोध्या में राम मंदिर के निर्माण के पक्ष में नहीं थे और कांग्रेस ने भी अपने शासन के दौरान इस बारे में कुछ नहीं किया। जाटलैंड में शाह ने कहा कि ये चुनाव मोदी जी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने का चुनाव है। मोदी जी ने गरीबों और किसानों के उत्थान के लिए बहुत सारे कार्य किए हैं। मोदी जी ने गुड़ और गन्ने के इस क्षेत्र में गन्ने के लिए राष्ट्रीय नीति बनाकर ढेर सारे बदलाव किए हैं। उन्होंने कहा कि आप याद कीजिये जब कांग्रेस की सरकार थी, तब गन्ने की स्र क्क 210 रुपये प्रति क्विंटल थी। आज इसे 340 रुपये प्रति क्विंटल करने का काम मोदी जी ने किया है।

जनता मोये-मोये कर देगी, अलग अंदाज में राजनाथ सिंह ने विपक्ष पर कसा तंज, बज उठीं तालियां

नई दिल्ली। विपक्षी इंडिया ब्लॉक पर कटाक्ष करते हुए, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि यह गठबंधन लोकसभा चुनावों में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन या भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) का सामना नहीं कर सकता क्योंकि देश की जनता मोये-मोये कर देगी। राजनाथ के इतना कहते ही तालियां बज उठीं। गाजियाबाद में सात चरण के आम चुनावों के लिए मौजूदा विधायक और भाजपा उम्मीदवार अतुल गर्ग के पक्ष में प्रचार करते हुए रक्षा मंत्री सिंह ने कहा कि विपक्षी गुट 2024 के लोकसभा चुनावों में एनडीए का मुकाबला करने के लिए संघर्ष करेगा। उन्होंने कहा कि गाज़ियाबाद से मेरा बहुत आत्मीय रिश्ता है। यह वही क्षेत्र है, जिसने पहली बार मुझे चुनकर, लोक सभा में अपना प्रतिनिधित्व करने का काम किया था। ग़ाज़ियाबाद आना मेरे लिए कोई घटना नहीं है।

राजनाथ ने कहा कि पिछले दस वर्षों से वीके सिंह जी यहाँ पर आप लोगों के प्रतिनिधि के रूप में काम करे थे। उन्होंने बहुत सुंदर काम किया और केंद्रीय मंत्री के रूप में भी उन्होंने अच्छा काम किया है। इस बार पार्टी ने अतुल गर्ग को प्रत्याशी बनाया है। वे भी काफ़ी अनुभवी व्यक्ति हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा से लड़ने और उसे हराने के लिए कई विपक्षी दल एक साथ आए। हालाँकि, आप सभी देख सकते हैं कि यह कुछ स्वार्थी विपक्षी नेताओं की सुविधा का गठबंधन है। हालाँकि, वे एकजुट होकर भी एनडीए का सामना नहीं कर सकते। इस देश की जनता इसका भी मोये मोये कर देगी। वायरल मोये मोये ट्रेंड एक सर्बियाई गाने से शुरू हुआ, जिसने टिकटॉक पर बड़े पैमाने पर लोकप्रियता हासिल की और बाद में विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर फैल गया। हिट गाना मोये मोर, आधिकारिक तौर पर सर्बियाई गायक-गीतकार तेया डोरा द्वारा डेज़नम के नाम से जारी किया गया था।

उत्तर प्रदेश में दंगा बर्दाश्त नहीं, चुनावी सभा में बोले सीएम योगी, अब जेल जाने से भी डर रहे हैं अपराधी

नई दिल्ली। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बुधवार को कहा कि उत्तर प्रदेश में अपराधी अब जेल जाने से डरते हैं। जन चौपाल को संबोधित करते मुख्यमंत्री ने कहा कि अगर माफिया में डर नहीं होगा तो इससे गरीबों का जीना मुश्किल हो जायेगा। उन्होंने कहा कि 2017 से पहले ज्यादातर इलाकों में सूर्यास्त के बाद पुलिस स्टेशनों पर भी ताले लगा दिए जाते थे। अपराधियों को लगा कि यह सरकार भी पिछली सरकारों की तरह होगी, लेकिन हमने जीरो टॉलरेंस की नीति अपनाई। उन्होंने कहा कि आप अपराध रोकें या इसकी कीमत चुकाने के लिए तैयार रहें। अधिकांश अपराधी जमानत लेकर जेल चले गये। अब वे कह रहे हैं कि हमें जेल मत भेजो, हम वहां जाने से डरते हैं। योगी ने दावा किया कि अधिकांश अपराधी हाथों में तख्तियां लेकर सड़कों पर घूम रहे हैं कि वे जीवन भर काम करके अपना जीवन यापन करेंगे, लेकिन कानून नहीं तोड़ेंगे। उन्होंने कहा कि यदि माफियाओं और अपराधियों में कानून का डर नहीं होगा तो वे गरीबों, व्यापारियों और आम नागरिकों का जीना मुश्किल कर देंगे। यूपी में आए दिन दंगे होते रहते थे।

राहुल की भारत जोड़ो यात्रा में हुए थे शामिल, बृजभूषण का भी किया था विरोध

अब भाजपा के हुए बॉक्सर विजेंदर सिंह

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव 2024 से पहले बॉक्सर विजेंदर सिंह बुधवार को भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) में शामिल हो गए। बॉक्सर विजेंदर सिंह ने ट्विटर पर एक लाइन का एक पोस्ट किया था, जिसे पहले एक्स के नाम से जाना जाता था, जिससे लोकसभा चुनाव से पहले कई अटकलें शुरू हो गईं। बीजेपी में शामिल होने के बाद बॉक्सर विजेंदर सिंह ने कहा कि मैं देश के विकास और जनता की सेवा के लिए आज बीजेपी में शामिल हुआ हूं। उनका नाम पिछले कुछ दिनों से मथुरा से पार्टी के उम्मीदवार के रूप में चर्चा में था, जहां से अभिनेता और मौजूदा सांसद हेमा मालिनी फिर से चुनाव लड़ रही हैं। हालांकि, खबर यह भी आई थी कि वह मथुरा से कांग्रेस के उम्मीदवार भी हो सकते हैं। लेकिन वह भाजपा में शामिल हो गए। इससे पहले उन्होंने एक्स को संबोधित करते हुए लिखा था, जनता जहां चाहे, मैं तैयार हूं। सिंह जाट समुदाय से आते हैं, जिसका हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश और राजस्थान में बड़ी संख्या में सीटों पर राजनीतिक प्रभाव है। 2019 चुनाव से पहले कांग्रेस पार्टी में शामिल होकर राजनीति में कदम रखने वाले ओलंपिक पदक विजेता मुक्केबाज विजेंदर सिंह ने राजनीति छोड़ने की बात कही थी। मुक्केबाज ने एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर एक पोस्ट में अपने फैसले की जानकारी दी।

कूच बिहार में पीएम मोदी की रैली, टीएमसी ने कहा- जब चुनाव होता है तभी आती है याद

नई दिल्ली। पश्चिम बंगाल का कूच बिहार निर्वाचन क्षेत्र गुरुवार को एक उग्र लोकसभा अभियान के लिए तैयार हो रहा है, जिसमें प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री ममता बनर्जी दोनों की बैक-टू-बैक रैलियां हैं। बनर्जी का दोपहर के आसपास कूच बिहार में एक रैली में बोलने का कार्यक्रम है, जबकि पीएम दोपहर 3 बजे के आसपास रासलीला मैदान में एक मेगा रैली को संबोधित करेंगे, कार्यक्रम स्थल 30 किमी दूर हैं। कूच बिहार लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र, जो हाल ही में मौजूदा भाजपा सांसद और केंद्रीय गृह राज्य मंत्री निसिथ प्रमाणिक और टीएमसी नेता और मंत्री उदयन गुहा के समर्थकों के बीच झड़प का शिकार हुआ था, अब प्रतिष्ठा का युद्धक्षेत्र बन गया है, जहां दोनों पार्टियां कोई कसर नहीं छोड़ रही हैं। टीएमसी नेता शशि पांजा ने कूच बिहार में प्रधानमंत्री मोदी की रैली पर कहा कि प्रधानमंत्री बंगाल में तभी आते हैं जब चुनाव होता है। हमारा उनसे यही निवेदन है कि बंगाल को 100 दिन के काम के पैसे नहीं मिले हैं।

इंडिया गठबंधन के नेताओं पर जेपी नड्डा का तंज

आधे जेल में हैं, आधे बेल पर हैं

नई दिल्ली। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने आज कहा कि विपक्षी इंडिया गुट वंशवादी पार्टियों का गठबंधन है, जिसके आधे नेता जेल में हैं और आधे जमानत पर हैं। नड्डा ने राजस्थान के झालावाड़ में एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए यह टिप्पणी की। भाजपा ने झालावाड़-बारां लोकसभा क्षेत्र से दुष्यन्त सिंह को फिर से उम्मीदवार बनाया है। उन्होंने कहा कि इंडिया गठबंधन एक भ्रष्टाचार बचाओ गठबंधन है। इसमें ऐसी पार्टियाँ हैं जिनमें अध्यक्ष भी परिवार से हैं, महासचिव भी परिवार से हैं और मंत्री भी परिवार से हैं। ये परिवार की पार्टियां हैं। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि कांग्रेस ने हर जगह घोटाले किये हैं।

उन्होंने पूछा, राहुल गांधी जमानत पर हैं या नहीं? क्या सोनिया गांधी, चिदंबरम, (आप के राज्यसभा सांसद) संजय सिंह जमानत पर हैं या नहीं? क्या अरविंद केजरीवाल, मनीष सिसौदिया जेल में हैं या नहीं? उन्होंने कहा, इंडी गठबंधन के आधे नेता जेल में हैं और आधे जमानत पर हैं। नड्डा ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की भी सराहना करते हुए कहा कि उनके नेतृत्व में देश तेज गति से आगे बढ़ा है। उन्होंने कहा कि आज भारत की आकांक्षा है कि भ्रष्टाचार मुक्त सरकार हो। विकासोन्मुखी सरकार हो। मोदी जी के नेतृत्व में देश तेज गति से आगे बढ़ा। जेपी नड्डा ने कहा कि पीएम गरीब कल्याण अन्न योजना के तहत 80 करोड़ लोगों को मुफ्त अनाज दिया जा रहा है। परिणाम स्वरूप आज देश में करीब 25 करोड़ लोग गरीबी रेखा से ऊपर उठ गए हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में आज गांवों की तस्वीर बदल गई है। ऐसे 18,000 गांव थे, जहां पहले की सरकारों के दौरान बिजली नहीं थी।2014 में देश का प्रधानमंत्री बनने के बाद मोदी जी ने मात्र 1,000 दिन में 18,000 गांवों को बिजली पहुंचाई। उन्होंने कहा कि आज भारत की आकांक्षा है- एक भ्रष्टाचार मुक्त सरकार हो। एक विकास युक्त सरकार हो। मोदी जी के नेतृत्व में तेज गति से देश आगे बढ़े।

राजनीति

अजित पवार नहीं कर रहे घड़ी चुनाव चिह्न पर अदालत के निर्देश का पालन

सुप्रीम कोर्ट ने एनसीपी से मांगा 19 मार्च के बाद जारी विज्ञापनों का ब्योरा

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री अजीत पवार से 24 घंटे के भीतर एक हलफनामा दायर करने को कहा है। जिससे यह प्रदर्शित किया जा सके कि राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) के उनके गुट ने पिछले आदेश का पालन कैसे किया है, जिसमें विज्ञापनों और सार्वजनिक नोटिसों में अस्वीकरण शामिल करना अनिवार्य था।

यह निर्दिष्ट करते हुए कि उनके गुट को आवंटित घड़ी प्रतीक चल रही न्यायिक जांच के अधीन था। इसके साथ ही, न्यायमूर्ति सूर्यकांत और केवी विश्वनाथन की पीठ ने वरिष्ठ पवार को अपने भतीजे के इस आरोप को खारिज करने के लिए गुरुवार को सुनवाई से पहले एक हलफनामा दाखिल करने को कहा कि शरद पवार खेमा अदालत के 19 मार्च के अंतरिम आदेश को अंतिम के रूप में पेश कर रहा है।

19 मार्च को पीठ ने अजीत पवार गुट को घड़ी चिन्ह और राकांपा नाम का उपयोग जारी रखने की अनुमति दी, लेकिन एक चेतावनी के साथ कि वह प्रमुख अंग्रेजी, मराठी और हिंदी दैनिक समाचार पत्रों में सार्वजनिक नोटिस जारी कर जनता को सूचित करेगी कि आवंटन घड़ी चिन्ह अदालत द्वारा सुनवाई की गई याचिका के परिणाम के अधीन है। पीठ ने कहा कि इस तरह की घोषणा अजीत पवार गुट द्वारा जारी किए गए प्रत्येक पर्चे, विज्ञापन, ऑडियो या वीडियो क्लिप में शामिल की जाएगी। शरद पवार का प्रतिनिधित्व कर रहे वरिष्ठ वकील अभिषेक मनु सिंघवी ने यह मामला पीठ के समक्ष रखा।

Fatva samachar 05 April 2024_17 feb page-1.qxd 4/3/2024 11:25 PM Page 2

सबसे ज्यादा टैक्स वसूली जीएसटी से

केंद्र एवं राज्य सरकारों द्वारा पुरानी विक्रय कर व्यवस्था को समाप्त कर, वर्ष 2017 से जीएसटी वस्तु एवं सेवा कर के रूप में टैक्स की जो नई व्यवस्था शुरू की है। उसमें सबसे ज्यादा टैक्स गरीबों को देना पड़ रहा है। वित्तीय वर्ष 2017-18 में जब यह टैक्स शुरू हुआ था। उस वित्तीय वर्ष में 7.9 लाख करोड़ रुपए जीएसटी से केंद्र एवं राज्य सरकारों को मिले थे। उसके बाद से दायरा निरंतर बढ़ता चला गया। वस्तुओं पर टैक्स के अलावा सेवाओं को जीएसटी के दायरे में लाकर बहुत सारी चीजों को शामिल किया गया। जिसके कारण जीएसटी का कलेक्शन साल दर साल बढ़ता रहा। वस्तुओं की खरीदी के साथ-साथ अब हर किस्म की सेवा में भी जीएसटी का भुगतान गरीब और अमीर सभी को करना पड़ रहा है। जिन सेवाओं पर कभी कोई टैक्स नहीं लगता था, उन सभी को टैक्स के दायरे में लाया गया है। टैक्स की दरें भी बहुत ज्यादा होने के कारण, जीएसटी का बोझ आम आदमी पर बढ़ता ही जा रहा है। सरकार की प्रतिमाह जीएसटी की कमाई लगातार बढ़ रही है। यह टैक्स जनता से ही वसूल किया जा रहा है। 2017-18 में जीएसटी से 7.19 लाख करोड़, 2018-19 में 11.77 लाख करोड़, 2019-20 में 12.22 लाख करोड़, 2020-21 में 11.36 लाख करोड़, इस वित्तीय वर्ष में कोविड के कारण लंबे समय तक लॉकडाउन लगा रहा। 2021-22 में 14.76 लाख करोड़ रुपए की आय सरकार को हुई। उसके बाद केंद्र एवं राज्य सरकारों ने जीएसटी के दायरे में अन्य वस्तुओं और सेवाओं को शामिल किया। इस कारण 2022-23 और 2023-24 में जीएसटी की आय बड़ी तेजी के साथ बढ़ना शुरू हुई। वर्ष 2023 के मुकाबले में वर्ष 2024 में जीएसटी के कलेक्शन में 22 से 23 फ़ीसदी तक की वृद्धि देखी जा रही है। केंद्र सरकार द्वारा जो राज्यवार आंकड़े जारी किए गए हैं, उसमें कर्नाटक राज्य से 26 फ़ीसदी, हरियाणा में 23 फ़ीसदी, महाराष्ट्र में 22 फ़ीसदी, पंजाब राज्य में 20 फ़ीसदी, उत्तर प्रदेश में 19 फ़ीसदी, मध्य प्रदेश में 19 फ़ीसदी, गुजरात में 15 फ़ीसदी, राजस्थान में 15 फ़ीसदी तथा बिहार राज्य में 14 फ़ीसदी की दर से टैक्स कलेक्शन में वृद्धि हुई है। वर्ष 2023-24 के मार्च महीने में जीएसटी कलेक्शन 11.5 फ़ीसदी बढ़कर 1.78 लाख करोड रुपए का हो गया है। जो अभी तक का सर्वाधिक जीएसटी कलेक्शन है। यह टैक्स आम जनता से प्रत्यक्ष कर के रूप में वसूल किया जा रहा है। केंद्र सरकार और राज्य सरकारों ने ऐसी कोई वस्तु अथवा सेवा को नहीं छोड़ा है, जो जीएसटी के दायरे में नहीं आती हो। उन्हीं चीजों को जीएसटी के दायरे से बाहर रखा गया है, जिसमें बहुत कम राजस्व की प्राप्ति होती है। भारत के गरीब हों या मध्यम वर्ग हो, किसान हों यह पढ़ाई करने वाले छात्र-छात्राएं हों। सभी को 12 फ़ीसदी से लेकर 28 फ़ीसदी तक का टैक्स देना पड़ रहा है। लोगों की क्रय क्षमता लगातार घटती चली जा रही है। भारत में सबसे ज्यादा टैक्स गरीबों से वसूल किया जा रहा है। गरीब जितनी भी कमाई करता है, वह पूरी खर्च कर देता है। गरीब के परिवार में दो से तीन लोग काम करते हैं। महीने में 20 से 30000 रूपये किसी भी तरीके से परिवार के सभी सदस्य मिलकर कमाते हैं। जो पैसा उनके हाथ में आता है वह सारा खर्च कर देते हैं। वही सबसे ज्यादा जीएसटी का टैक्स भर रहे हैं। भारत में गरीबों की

आबादी सबसे ज्यादा है। कांग्रेस पार्टी इसे गब्बर सिंह टैक्स भी कहती है। जीएसटी का आतंक गरीब और मिडिल क्लास सबसे ज्यादा झेल रहा है। गरीब अपना पैसा शराब, बिड़ी, सिगरेट, गुटखा, तंबाकू और पेट्रोल में सबसे ज्यादा खर्च करता है। इनमें सबसे ज्यादा टैक्स देना होता है। पेट्रोल और डीजल को जीएसटी के दायरे से बाहर रखा गया है, लेकिन अन्य वस्तुएं जीएसटी के दायरे में हैं। सरकार एक गरीब परिवार से 3000 रूपये से लेकर 9000 रूपये तक का टैक्स वसूल करती है। बदले में गरीब परिवार को 2 से 3000 रूपये की आर्थिक सहायता प्रतिमाह केंद्र एवं राज्य सरकारों द्वारा दी जा रही है।

स्वतंत्र भारत के इतिहास में गरीबों से प्रत्यक्ष रूप से कभी भी इतना भारी टैक्स नहीं वसूल किया गया, जो जीएसटी के रूप में वसूल किया जा रहा है। गरीबों की 80 करोड़ से ज्यादा की आबादी है।

देखते है आगे होता है क्या?

▪ संजय गोस्वामी

जी हाँ महंगा पर सकता है ऐे सौदा क्योंकि श्री राज ठाकरे के एनडीए में शामिल होने से एनडीए को ख़ासकर हिन्दी बाहुल्य इलाके खासकर बिहार और उप्र में नुकसान हो सकता है इसका कारण है मनसे द्वारा महाराष्ट्र में उत्तर भारतीय पर टिका टिपण्णी और बहुत से फेरिवालो से मुंबई में मारपीट का मामला इससे उस पार्टी ने एक ऐसी छाप छोड़ी है जिससे उसके अपने ही घर में सिर्फ 1 विधानसभा में ही जीत मिली है जो वर्षों पहले मार पिट के शिकार हुए होंगे वह कभी वोट नहीं देंगे और ...

उप्र, बिहार एनडीए का बेस है कोरोना में भी अवसर था लेकिन आरएसएस व माननीय मुख्यमंत्री योगीजी ने अच्छा काम किया और पुनः जीत गए अतः महाराष्ट्र में भी आपस में ही टकराव है ऐसे में हो सकता है कुछ जनाधार मिल जाए लेकिन उसका खामियाजा उत्तर भारत में खासकर ग्रामीण इलाके में गरीब लोग जो रोजी रोटी की तलाश में मुंबई आते हैं और किसी पार्टी के इसारे पर बेरहमी से पीटा जाता हो तो क्या वह वोट करेंगे? एक प्रश्नचिन्ह है। 2024 लोकसभा चुनावों से पहले महाराष्ट्र में बड़ी सियासी हलचल सामने आई है। बीजेपी के अगुवाई वाले महायुति में महाराष्ट्र नव निर्माण सेना (मनसे) के प्रमुख राज ठाकरे की एंट्री तय मानी जा रही है। दावा किया जा रहा है कि जल्द ही महायुति के चौथे पार्टनर के तौर पर मनसे का नाम घोषित हो सकता है। महाराष्ट्र में राज ठाकरे को साथ लेने के पीछे कहा जा रहा है कि इससे बीजेपी उद्धव ठाकरे फैक्टर को काटकर महाविकास अघाड़ी को और कमजोर कर सकेगी, लेकिन इसी के साथ सवाल खड़ा हो रहा है कि पूर्व में उत्तर भारतीयों के नजर में खलनायक रहे राज ठाकरे को साथ लेकर बीजेपी यूपी-बिहार जैसे हिन्दी पट्?टी वाले राज्य में सियासी नुकसान उठाना चाहेगी। राज ठाकरे पूर्व में हिन्दी भाषा को लेकर भी सवाल खड़े करते आए हैं।

उन्होंने दिसम्बर, 2018 में कहा था कि हिन्दी राष्ट्रीय भाषा नहीं है फिर राजनीति में कुछ भी चलता है मनसे का एनडीए में शामिल होते ही उत्तर भारतीय में नाराजगी कई चैनलों में खुलकर आई और चूंकि 10साल में किसी भी पार्टी के लिए एंटी-इनकंबेंसी यानी सत्ता-विरोधी लहर कुछ ना कुछ तो होता है जिसे समझना बहुत मुश्किल है क्योंकि यह मार्जिन अभी उतना दिख नहीं रहा है लेकिन मनसे के आने से सत्ता-विरोधी लहर ख़ासकर उप्र, बिहार व मप्र में अगर 1परसेंट भी फिसला तो कम से कम 50सीट ऐसे हैं जहाँ मामला बिगड़ सकता है जहाँ तक साउथ का प्रश्न है कर्नाटका से बीजेपी को अच्छा वोट मिलता है लेकिन अभी वहाँ कांग्रेस की सरकार है अतः वहाँ उपमुख्यमंत्री डी के शिवकुमार हैं जो राजनीती के उस इलाके के चाणक्य माने जाते हैं अतः वहाँ अभी से फील्डिंग लगा रखी है अतः

वहाँ 10सीट ऐसे है जहाँ हार जीत का मामला 1से 2परसेंट है अतः वहाँ भी एन डी ए को नुकसान होता दिख रहा है जिसतरह चुनावी चंदे का मामला सामने आया है उससे यही लग रहा है कि सबसे ज्यादा चंदे वाली पार्टी बीजेपी सवालों से घिर सकती है और विपक्षी पार्टियों इसे भुनाने में क़ोई कसर नहीं छोड़ेगी उप्र में पेपर लीक मामलों से काफी लोगों में नाराजगी है अतः चुनाव में इसका असर भी देखने को मिल सकती हैं हालांकि मुख्यमंत्री योगीजी का काम बेहतरीन हुआ है अतः वहाँ पिछले चुनाव के मुकाबले 4-5 सीटों का नुकसान हो सकता है क्योंकि समाजबादी पार्टी व कांग्रेस के गठबंधन से अल्पसंख्यक का वोट स्प्लिट नहीं होगा जहाँ तक बिहार की बात है वहाँ मनसे का नाम तो नहीं जानते लेकिन श्री राज ठाकरे को बिलकुल पसंद नहीं करते और बहुत से गरीब लोग जो रोजी रोटी के लिए मुंबई जाते हैं वह और उनका परिवार भी किसे वोट करेंगे ऐ आने वाला समय बताएगा बिहार में ऐसे भी बीजेपी आधे सीट पर चुनाव लड़ रही है और यदि जद (यू) अगर 14-15 सीट भी ले आती है और इंडिया गठबंधन में कुछ सीट की जरुरत पड़ी तो श्री नीतीश कुमार को पलटीमारते देर नहीं लगेगी अधिकतर सीटों पर हार जीत का मार्जिन कम होता है अगर हरेक राज्य में इसी तरह 4-5सीट भी कम हुए तो जीत हेतु कहीं ऐसा ना हो की 275 के करीब सीट भी ना जीत सके, क्योंकि एनडिए यही हाल 2004 के समय भी चुनाव प्रचार के समय लग रहा था कि 300 से 350सीट जीत जाएगी और भारत उदय का रथ निकला लेकिन 200का आकड़ा भी नहीं पार कर सकी और महज 182सीट ही प्राप्त हो सकी चूंकि गणित में संभावना का थ्योरी ऐ बताता है कि यदि क़ोई 2बार लगातार जीत दर्ज करता है तो तीसरे बार भी जीत की पुरी संभावना रहती है लेकिन चुनाव में हकीकत उल्टी रहती है क्योंकि सत्ताविरोधी लहर और जनता की इच्छा कुछ और होती है देखते है आगे होता है क्या ?हालांकि श्री मोदीजी ने सराहनीय कार्य किया है लेकिन कुछ चीज जात, पात, धर्म आदि पर लोग गुमराह हो जाते हैं और फिर काम को कम और कुछ मुद्दों पर आपस में ही सहमति नहीं बन पाती सरकार ने हर फिल्ड में अच्छा काम है लेकिन लोकल समस्या अभी भी एक विकराल समस्या है जिस तरह अंतराष्ट्रीय रिश्ते मजबूत हुए और चंद्रयान -3की इतिहासिक वैज्ञानिक विकास भी सफलता की कड़ी है लेकिन जनता क्या इस कठिन परीक्षा को पूर्ण मार्क देती है तो ठीक है.हालांकि लोकतंत्र में देखते है आगे होता है क्या?

एक अभियान नशाखोरी की कातिल राहों के खिलाफ

कोई भी समाज तभी समृद्ध बन सकता है, जब इसकी युवा पीढ़ी स्वस्थ एवं सुंदर हो। यह स्वस्थता एवं सुंदरता केवल शरीर से ही नहीं, अपितु विचारों में भी झलकनी चाहिए। यह युवा शक्ति ही किसी प्रदेश या देश का आने वाला कल निर्धारित करती है। जिस तरह एक बीज में पूरे पौधे अथवा पेड़ की संरचना, रंग-रूप, फल इत्यादि सब निहित होता है, उसी तरह युवा पीढ़ी समाज का बीज है। बीज अच्छा हो और उसका रोपण एवं पालन-पोषण अच्छा हो, तभी वह फलदार वृक्ष बनता है। इसी तरह यदि हमारी युवा पीढ़ी अच्छे वातावरण में पले-बढ़े, तो हम एक समृद्ध प्रदेश एवं खुशहाल राष्ट्र का निर्माण करने में सफल हो सकते हैं।

इसके बावजूद हम आजकल एक भयाभह बीमारी के रूप में सुनते, पढ़ते और देखते हैं और वह है, मादक पदार्थों का प्रचलन। नशाखोरी केवल कानून व्यवस्था का ही विषय नहीं है,वरन शिक्षा व्यवस्था, रहन-सहन, पारिवारिक वातावरण, बच्चों की परवरिश एवं अन्य मनोरंजन सुविधाएं आदि इसको प्रभावित करते हैं। शराब, सिगरेट, भांग, चरस, हेरोइन, तंबाकू, चिट्टा इत्यादि हमारी युवा पीढ़ी की नसों में जहर घोल रहा है। एक सर्वेक्षण के अनुसार देश के करीब 45 फीसदी नौजवानों को नशे की लत लग गई है। नशा मुक्त भारत आंदोलन की पंजाब इकाई द्वारा अमृतसर के रतन सिंह चौक, आबादी करमपुरा में नशा मुक्त भारत आंदोलन की राष्ट्रीय संयोजक, सामाजिक कार्यकर्ता मेधा पाटकर की अध्यक्षता में तथा कर्नाटक विधानसभा के पूर्व उप-सभापति एवं विधायक बी आर पाटिल, भाकियू (उग्रहां) के अध्यक्ष जोगिंदर सिंह उग्रहां, मध्यप्रदेश के पूर्व विधायक एवं किसान संघर्ष समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ सुनीलम की विशेष उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत विभिन्न धर्मों के प्रतिनिधियों द्वारा नशा मुक्ति के संदेश के साथ हुई। सभी धर्म गुरुओं ने बताया कि उनके धर्म में नशा करना निषेध है इसके बावजूद भी नशे का प्रभाव लगातार बढ़ता जा रहा है। सभी ने गांधी जी का उल्लेख करते हुए कहा कि शराब के सेवन से मनुष्य के शरीर और बुद्धि के साथ-साथ आत्मा का भी नाश हो जाता है। शराबी अनेक बीमारियों से ग्रसित हो जाता है।

कुमार कृष्णन

नशा मुक्त भारत आंदोलन के राष्ट्रीय सम्मेलन में केंद्र सरकार एवं पंजाब सरकार से कानूनी तौर पर नशाबंदी लागू करने, सभी तरह के नशे का उत्पादन करने वाले केंद्रों को बंद करने, सभी स्कूलों और कॉलेजों में डोप टेस्ट केंद्र खोलने, युवाओं को रोजगार ,की कानूनी गारंटी देने, केंद्र और राज्य सरकार के कर्मचारियों और जनप्रतिनिधियों को नशा करते या नशा किए हुए पाए जाने पर तत्काल निलंबित किए जाने का कानूनी प्रावधान करने, 10 हजार की आबादी पर एक नशा मुक्ति और पुनर्वास केंद्र खोलने, नशा करने वालों को मरीज मानकर निःशुल्क इलाज करने, शराब की दुकान बंद करने के लिए 50ञ्ज महिलाओं के द्वारा लिखित आपत्ति करने के प्रावधान को कानूनी तौर पर लागू करने, अवैध शराब बिक्री करने वाले को जमानत देने के कड़े प्रावधान करने, नशीले पदार्थों की तीन बार बिक्री करने पर पकड़े जाने वाले को जिला बदर करने , नशा से मरने वालों के परिजन को 10 लाख का मुआवजा देने की मांग करते हुए प्रस्ताव पारित किया गया। प्रस्ताव में कहा गया कि सरकारें राजस्व जुटाने की आड़ में नशा बिक्री एवं उत्पादन करने की बजाय देश की 500 सबसे बड़ी कंपनियों पर 50ञ्ज टैक्स लगाने और स्कूल कॉलेज के पाठ्यक्रम में नशाबंदी विषय अनिवार्य तौर पर जोड़े जाने का प्रावधान करें। सम्मेलन में लिए गए उक्त प्रस्तावों को सरकारों को भेजने का निर्णय लिया गया तथा सभी चुनाव लड़ने वाली पार्टियों से इन मुद्दों को मेनिफेस्टो में शामिल करने की मांग की गई। नशा मुक्त भारत आंदोलन के पंजाब प्रांत के संयोजक एड.अंकुर गुप्ता ने सम्मेलन में आए सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि जब वे डी ए व्ही कॉलेज के अध्यक्ष थे तभी उन्होंने पंजाब को नशा मुक्त बनाने का संकल्प लिया था।

उन्होंने कहा कि युवाओं की ऊर्जा को षडयंत्र पूर्वक बर्बाद कर पंजाब को कमजोर किया जा रहा है। कार्यक्रम के दौरान मेधा पाटकर ने स्वयं नशा न करने तथा अपने सामने किसी को भी नशा नहीं करने देने तथा हर तरह के नशे से मुक्त रहने का संकल्प सम्मेलन में आए हजारों अमृतसर वासियों को दिलाया। सामाजिक कार्यकर्ता मेधा पाटकर ने कहा कि नशा तो कई चीजों का होता है, लेकिन जीवन को बर्बाद करने वाले और दूसरों पर खास कर महिलाओं पर हिंसा और अत्याचार करने वाला नशा शराब और ड्रग्स का होता है। उन्होंने कहा कि नशा का व्यापार और उससे कमाई करने का अधर्म सत्ताधीश कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि शराब के व्यापारी और राजनीति में गठजोड़ है इसलिए गुजरात के साथ-साथ और 5- 6 राज्यों में शराब बंदी का कानून है लेकिन पंजाब जैसे राज्यों में क्यों नहीं? जबकि संविधान के अनुच्छेद 47 के अनुसार शराबबंदी हर शासन की जिम्मेदारी और कर्तव्य है। इसलिए हम पंजाब को नशा मुक्त करने के साथ-साथ भारत को नशा मुक्त करना चाहते हैं।

कर्नाटक के विधायक बी आर पाटिल ने कहा कि शराब माफिया अनेक राज्यों में राजनीतिक दलों और सरकारों पर हावी हो गया है। उन्होंने कहा कि शराब एवं नशीले पदार्थों की खरीद और नशीले पदार्थों की खेती और बिक्री से जो राजस्व प्राप्त हो रहा है, उसे गांधी जी ने पाप की कमाई कहा था।

राजकाज

फिल्मी सितारों पर दांव लगा रही है भाजपा

भारतीय जनता पार्टी फिल्मी कलाकारों पर दांव लगा रही है। पहले कांग्रेस राज्यसभा चुनाव के जरिए फिल्मी सितारों को संसद ले जाती थी। लेकिन अब भाजपा का फिल्मी सितारों के साथ बहुत गहरा रिश्ता बन गया है। भाजपा की टिकट लेकर बहुत सारे फिल्मी सितारे संसद पहुंचे हैं। इसका फायदा फिल्मी सितारों को भी हुआ है. भाजपा को भी हुआ है. 2024 के लोकसभा चुनाव में भी भाजपा ने कई फिल्मी सितारों को चुनाव मैदान में उतारा है. फिल्म स्टार गोविंदा एनडीए की ओर से लोकसभा चुनाव के मैदान में है. कंगना रनोत हिमाचल से चुनाव लड़ रही है. मथुरा से हेमा मालिनी चुनाव लड़ रही हैं. भोजपुरी फिल्मी कलाकार मनोज तिवारी दिल्ली से तीसरी बार चुनाव लड़ रहे हैं। गोरखपुर से रवि किशन और आजमगढ़ से दिनेश लाल यादव निरहुआ भाजपा की टिकट पर चुनाव लड़ रहे हैं। दक्षिण भारत के कई फिल्मी कलाकारों को भाजपा चुनाव मैदान में उतर रही है। भाजपा को लोकसभा चुनाव में फिल्मी सितारों और खिलाड़ियों का बड़ा जबरदस्त फायदा हुआ है। अभी भी कई सीटों पर फिल्मी कलाकारों को खोजा जा रहा है।

95 लाख भी नहीं निर्मला सीतारमण के पास?

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने लोकसभा चुनाव लड़ने से इनकार कर दिया है। उन्होंने इसकी वजह बताई है, कि उनके पास चुनाव लड़ने के लिए आर्थिक संसाधन नहीं है। चुनाव आयोग ने लोकसभा चुनाव लड़ने के लिए उम्मीदवार की अधिकतम खर्च सीमा 95 लाख निर्धारित कर रखी है। निर्मला सीतारमण कई वर्षों से सांसद और मंत्री हैं। सरकारी सुख सुविधा और सरकारी बंगले में रह रही हैं। लाखों रुपए महीने का भुगतान उन्हें सरकार से किया जाता है। इसके बाद भी वह आंध्रा ओर तमिलनाडु की किसी भी लोकसभा सीट से लड़ने के लिए तैयार नहीं हुई। भाजपा को चुनावी बांड से 8500 करोड रुपए से ज्यादा का चंदा मिला है। वह केंद्र सरकार में वित्त मंत्री के पद में है। पार्टी भी उनकी मदद कर सकती थी। जो बहाना उनने बनाया है, उस पर किसी को विश्वास नहीं हो रहा है। यह कहा जा रहा है, कि तमिलनाडु तथा आंध्र की किसी भी सीट से उनका चुनाव जीतना संभव नहीं था। जिसके कारण वह चुनाव लड़ने के लिए तैयार नहीं हुई। राज्यसभा के माध्यम से सांसद बनेगी, यह उनकी रणनीति है। मोदी मंत्रिमंडल की वह सबसे महत्वपूर्ण मंत्री हैं। नोटबंदी जीएसटी और इलेक्ट्रोल बांड की योजना उन्हीं के समय पर लागू की गई है। भाजपा चुनाव लड़ने के लिए उन्हें करोड़ों रुपए की सहायता दे सकती थी। इसके बाद भी उन्होंने इनकार किया है, तो इसका मतलब है, कि उनका जीतना किसी भी हालत में संभव नहीं था।

महिला मुख्यमंत्रियों की संख्या बढ़ेगी?

एक समय था, जब कई राज्यों में महिला मुख्यमंत्री थी। तमिलनाडु में जयललिता, बिहार में राबड़ी देवी, उत्तर प्रदेश में मायावती, दिल्ली में शीला दीक्षित, मध्य प्रदेश में उमा भारती अपने समय में बड़ी चर्चित महिला मुख्यमंत्री रही हैं।

फीचर

नारियल पानी और संतरे से निखारें खूबसूरती

गर्मियों में तेज धूप और उमस से त्वचा झुलस जाती है, ऐसे में इस मौसम में पाये जाने वाले फलों से भी आप अपनी खूबसूरती निखार सकती हैं। नारियल पानी स्वास्थ्य के लिए फायेदमंद होने के साथ ही खूबसूरती निखारने में भी उपयोगी है।

नारियल पानी में ओमेगा 3 फैटी एसिड, विटामिन सी, एंजाइम्स , अमीनो एसिड और मिनरल्सए पाए जाते हैं, जैसे मैगनीशियम और पोटैशियम आदि। फेस पैक बनाने के लिये मुल्तासनी मिट्टी और नारियल पानी का प्रयोग करें। इस पेस्टा का पतला कोट चेहरे और गर्दन पर लगाएं। फिर कुछ मिनट इंतजार कर के चेहरे को सामान्य पानी से धो लें। इस फेस पैक से अपने चेहरे को रोजाना दो बार धोएं तो चेहरा अंदर से साफ होगा। इसके लिये आपको सुबह उठते ही मुंह धोना होगा। बालों में लगाए जाने वाले तेल के साथ नारियल पानी मिक्सा करें। फिर उंगलियों से सिर की मसाज करें। इससे स्कैयल्पा स्वनस्थक होगा और सिर की खुजली और रूखापन दूर होगा। अगर सिर में रूसी है तो वह भी दूर होगी। नारियल के पानी से जुएं भी खतम होती हैं। संतरा जितना स्वाद में रसीला होता है इसका रस सुंदरता निखारने के लिए उतना ही अच्छा। कई बार (टैनिंग) तेज धूप से त्वचा का रंग काला पड़ना आम समस्या है। विशेषज्ञों का मानना है कि संतरे के इस्तेमाल से रंग काला पड़ने से ठीक किया जा सकता है साथ ही इससे त्वचा का रंग साफ भी होता है। टैनिंग से छुटकारा पाने के लिए एक बड़ा चम्मच संतरे के छिल्के का पाउडर, हल्दी, कैलेमाइन पाउडर या चंदन पाउडर और शहद की कुछ बूंदें मिलाकर पेस्ट बना लें। इसे चेहरे पर लगाकर हल्के हाथों से एक मिनट मलें और इसे पांच मिनट तक लगा रहने दें, फिर इसे पानी से धो लें। संतरे के रस में सिट्रिक एसिड होता है, जो प्राकृतिक रूप से ब्लीचिंग का काम करता है। अगर आप चाहे तो संतरे के रस को आइस ट्रे में फ्रीज कर सकती हैं और बाद में फ्रेश लुक के लिए इसे चेहरे पर लगा सकती है।

प्रेरणा

श्रद्धा के मुताबिक पूजा

हरेक व्यक्ति में चाहे वह जैसा भी हो, एक विशेष प्रकार की श्रद्धा पाई जाती है। लेकिन उसके द्वारा अर्जित स्वभाव के अनुसार उनकी श्रद्धा उत्तम (सतोगुणी), राजस (रजोगुणी) अथवा तामसी कहलाती है। अपनी श्रद्धा के अनुसार ही वह कतिपय लोगों से संगति करता है। अब वास्तविक तथ्य तो यह है कि जैसा कि गीता के 15 वें अध्याय में कहा गया है कि प्रत्येक जीव परमेर का अंश है। अतएव वह मूलत~इन समस्त गुणों से परे होता है। लेकिन जब वह भगवान के साथ अपने सम्बन्ध को भूल जाता है और बद्ध जीवन में भौतिक प्रकृति के संसर्ग में आता है तो वह विभिन्न प्रकार की प्रकृति के साथ संगति करके अपना स्थान बनाता है। इस प्रकार से प्राप्त कृत्रिम श्रद्धा तथा अस्तित्व मात्र भौतिक होते हैं। भले ही कोई किसी धारणा या देहात्मबोध द्वारा प्रेरित हो लेकिन मूलत~ वह निगरुण या दिव्य होता है। अतएव भगवान के साथ अपना सम्बन्ध फिर से प्राप्त करने के लिए उसे भौतिक कल्मष से शुद्ध होना पड़ता है। यही एकमात्र मार्ग है, निर्भय होकर कृष्णभावनामृत में लौटने का।

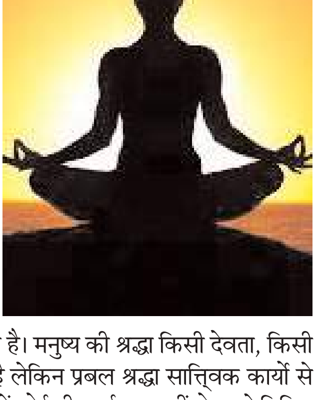

श्रद्धा मूलतः सतोगुण से उत्पन्न होती है। मनुष्य की श्रद्धा किसी देवता, किसी कृत्रिम ईश्वर या मनोधर्म में हो सकती है लेकिन प्रबल श्रद्धा सात्त्विक कार्यो से उत्पन्न होती है। किंतु भौतिक बद्धजीवन में कोई भी कार्य शुद्ध नहीं होता। वे मिश्रित होते हैं। वे शुद्ध सात्त्विक नहीं होते। शुद्ध सत्त्व दिव्य होता है। इसमें रहकर मनुष्य भगवान के स्वभाव को समझ सकता है। जब तक श्रद्धा पूर्णतया सात्त्विक नहीं होती, वह प्रकृति के किसी भी गुण से दूषित हो सकती है।

अपनी बात

मुजफ्फरपुर सांसद अजय निषाद ने सोशल मीडिया पर इसकी घोषणा की कि उन्होंने बीजेपी छोड़ दी है। बीजेपी छोड़ने के कुछ देर बाद ही दिल्ली में उन्होंने कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण कर ली। अजय निषाद ने बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा से कहा कि उनके साथ छल हुआ है। इससे वह दुखी हैं। इसलिए बीजेपी की प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा दे रहे हैं।

डीवाई चंद्रचूड़ ने देश में काम कर रही जांच एजेंसियों को लेकर एक बड़ा बयान दिया है जिसमें उन्होंने जांच एजेंसियों को लेकर कहा है कि जांच एजेंसियों को उन मामलों में मुस्तैद होकर कार्रवाई करनी चाहिए, जो राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े हुए हैं। खासतौर से संयुक्त राष्ट्र (यूएन) मामलों पर गौर करना चाहिए जो सार्वजनिक व्यवस्था के लिए खतरा बने हुए हैं। सीजेआई ने कहा कि तलाशी और जब्ती की जांच एजेंसियों की शक्तियों और किसी व्यक्ति की निजता के बीच संतुलन बैठना जरूरी है।

Fatva samachar 05 April 2024_17 feb page-1.qxd 4/3/2024 11:25 PM Page 3

लोकसभा निर्वाचन - 2024 : भोपाल जिले में 07 मई को होगा मतदान - मतदान के लिए संवैतनिक अवकाश रहेगा

भोपाल | सहायक श्रमायुक्त भोपाल संभाग, भोपाल ने बताया कि लोकसभा निर्वाचन - 2024 को जारी निर्वाचन कार्यक्रम के अनुसार भोपाल जिले में 07 मई 2024 को मतदान होगा। मतदान दिवस को किसी भी कारोबार व्यवसाय, औद्योगिक उपक्रम अथवा अन्य किसी भी स्थापना में नियोजित प्रत्येक व्यक्ति को मतदान के लिए संवैतनिक अवकाश प्रदान किए जाने के निर्देश है।

उन्होंने बताया कि उक्त दिशा-निर्देशों का पालन किया जाना सुनिश्चित करें,जिससे सभी श्रमिक, कर्मचारी सुगमतापूर्वक अपने मताधिकार का उपयोग कर सकें।

दो दिवसीय बटालियन कमांडर कॉन्क्लेव-2024 का आयोजन

भोपाल | मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ निदेशालय, भोपाल द्वारा 3 एवं 4 अप्रेल को सुल्तानिया इन्फैंट्री लाइन्स में बटालियन कमांडर कॉन्क्लेव -2024 का आयोजन किया जा रहा हैं। एनसीसी डायरेक्टरेट से प्राप्त जानकारी के अनुसार कॉन्क्लेव के माध्यम से प्रशिक्षणिक वर्ष 2023-24 की उपलब्धियों और कमियों पर गौर किया गया। कॉन्क्लेव में वर्ष 2024-25 के लिये रोड मैप भी प्रस्तुत किया गया।

कॉन्क्लेव में प्रस्तुत मैप में निदेशालय में भिन्न स्पर्धा और ट्रैनिंग में और सुधार संबंधी तथ्यों को दर्शाया गया है। वर्ष 2023-24 में मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ निदेशालय ओवर ऑल छठे स्थान पर रहा जो कि 5 स्थानों की बेहतरी थी। कॉन्क्लेव की अगुवाई मेजर जनरल श्री अजय कुमार महाजन, अपर महानिदेशक, एनसीसी निदेशालय कर रहे है।

उन्होंने वर्ष 2024-25 के लिये अपनी योजना एवं रूपरेखा बटालियन कमांडरों के साथ साझा की। कॉन्क्लेव में निदेशालय के प्रर्दशन की बेहतरी के लिये कारगार सुझाव भी प्राप्त किये।

शासकीय अस्थिबाधितार्थ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में सत्र 2024-25 प्रवेश शुरू आवेदन की तिथि 31 जुलाई 2024

भोपाल | संचालनालय सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग द्वारा संचालित शासकीय अस्थिबाधितार्थ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, परदेशीपुरा समाज कल्याण परिसर इन्दौर ने शासकीय दिव्यांग बालकों को जो 6 वर्ष एवं अधिक आयु समूह के हो, उन्हें नियमानुसार कक्षा 1वीं से 8वीं शिक्षण के लिये प्रवेश दिया जाना है।

सत्र 2024-25 के लिये प्रवेश प्रारंभ है। प्रवेश के लिये अर्हताओं में कक्षा 1 में आयु सीमा 6 वर्ष अधिक अथवा कक्षा अनुसार, शैक्षणिक योग्यता अंतिम उत्तीर्ण कक्षा की अंकसूची की छायाप्रति, आय प्रमाण पत्र, कम से कम 40 प्रतिशत दिव्यांगता होना आवश्यक है। इसके अलावा दिव्यांगता दर्शाते हुए 6 फोटो, मध्यप्रदेश के मूल निवासी का प्रमाण-पत्र, जाति प्रमाण-पत्र डिजीटल, आधार कार्ड, समग्र सामाजिक सुरक्षा आई.डी. (SSSM ID), यू.डी.आय.डी., बैंक खाता आधार से लिंग किया हुआ, जन्म प्रमाण-पत्र होना भी आवश्यक है।

इन्दौर नगर निगम सीमा से बाहर निवास करने वाले बालकों को प्रवेश पश्चात छात्रावास की सुविधा उपलब्ध रहेगी। आवेदन पत्र कार्यालय में कार्यालीन समय में अवकाश दिवस को छोडकर स्वयं उपस्थित होकर अथवा डाक द्वारा निःशुल्क प्राप्त किये जा सकते है। आवेदन की अंतिम तिथि 31 जुलाई, 2024 है।

33 अभ्यर्थियों ने भरा नाम-निर्देशन पत्र

अब तक 54 अभ्यर्थियों ने भरे 73 नाम-निर्देशन पत्र

दूसरे चरण के लिए 26 अप्रैल को मतदान होगा। सभी चरणों के मतदान की मतगणना 4 जून को होगी।

भोपाल | मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री अनुपम राजन ने बताया है कि लोकसभा निर्वाचन-2024 के निर्वाचन कार्यक्रम के अनुसार दूसरे चरण के लिये नाम-निर्देशन पत्र दाखिल करने की प्रक्रिया जारी है। दूसरे चरण के लिये नामांकन भरने के चौथे दिन 33 अभ्यर्थियों ने 46 नाम-निर्देशन पत्र प्रस्तुत किये। 28 मार्च से अब तक 54 अभ्यर्थियों द्वारा 73 नाम-निर्देशन पत्र दाखिल किये जा चुके हैं।

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री राजन ने बताया है कि 3 अप्रैल को लोकसभा संसदीय क्षेत्र क्रमांक-6 टीकमगढ़ (अजा) में 3 अभ्यर्थियों द्वारा 5 नाम-निर्देशन पत्र, लोकसभा संसदीय क्षेत्र क्रमांक-7 दमोह में 7 अभ्यर्थियों द्वारा 8 नाम-निर्देशन पत्र, लोकसभा संसदीय क्षेत्र क्रमांक-8 खजुराहो में 7 अभ्यर्थियों द्वारा 11 नाम-निर्देशन पत्र, लोकसभा संसदीय क्षेत्र क्रमांक-9 सतना में 3 अभ्यर्थियों द्वारा 7 नाम-निर्देशन पत्र, लोकसभा संसदीय क्षेत्र क्रमांक-10 रीवा में 6 अभ्यर्थियों द्वारा 6 नाम-निर्देशन पत्र, लोकसभा संसदीय क्षेत्र क्रमांक-17 नर्मदापुरम में 5 अभ्यर्थियों द्वारा 7 नाम-निर्देशन पत्र एवं लोकसभा संसदीय क्षेत्र क्रमांक-29 बैतूल (अजजा) में 2 अभ्यर्थियों द्वारा 2 नाम- निर्देशन पत्र दाखिल किये गये हैं।

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री राजन ने बताया कि नाम-निर्देशन पत्र दाखिल किये गये अभ्यर्थियों के शपथ पत्र एवं अन्य जानकारियां भारत निर्वाचन आयोग की वेबसाइट की लिंक https://affidavit.eci.gov.in/ पर देखी जा सकती हैं। उन्होंने बताया कि नामांकन पत्र दाखिल करने की अंतिम तिथि 4 अप्रैल है। 5 अप्रैल को नाम-निर्देशन पत्रों की संवीक्षा की जाएगी। नाम-निर्देशन पत्र भर चुके प्रत्याशी 8 अप्रैल तक अपने नाम वापस ले सकेंगे। दूसरे चरण के लिए 26 अप्रैल को मतदान होगा। सभी चरणों के मतदान की मतगणना 4 जून को होगी।

प्रदेशभर में 60 हजार लोकेशन पर प्रॉपर्टी के दाम बढ़े, आज से नए रेट से रजिस्ट्री होगी

चुनाव आयोग की एनओसी के बाद प्रदेश में जमीनों की दरों को लेकर नई कलेक्टर गाइडलाइन लागू हो गई है। प्रदेश में औसत पांच से 20 फीसदी तक दाम बढ़े है।

भोपाल | मध्य प्रदेश में कलेक्टर गाइड लाइन के अनुसार जमीनों की दरें बढ़ाने के प्रस्ताव को चुनाव आयोग द्वारा एनओसी दे दी गई है। नई दरों से रजिस्ट्री गुरुवार से होगी। प्रदेश में करीब 60 हजार लोकेशन पर प्रॉपर्टी के दाम औसत पांच प्रतिशत से 20 प्रतिशत तक बढ़ाए गए हैं।

मध्य प्रदेश पंजीयक एवं मुद्रांक कार्यालय ने एक अप्रैल से प्रदेश भर में कलेक्टर गाइड लाइन के हिसाब से जमीनों की कीमत बढ़ाने का प्रस्ताव तैयार कर लिया था। नई दरें बढ़ाने के लिए चुनाव आयोग से एनओसी मांगी थी, जिसकी अनुमति मिलने के बाद बुधवार को सभी जिला कलेक्टरों को नई गाइड लाइन का पालन करने के लिए पंजीयक एवं मुद्रांक महानिरीक्षक ने लिखा।

प्रदेश की 1 लाख 20 हजार लोकेशन में से करीब 60 हजार लोकेशन में बढ़ोतरी की गई है। भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, जबलपुर में करीब 14 हजार लोकेशन में से सिर्फ 20 प्रतिशत लोकेशन पर ही दाम बढ़ाए गए हैं। इस बार दरें बढ़ाने के लिए जीआई बेस्ड डाटा का इस्तेमाल किया गया। नई गाइड लाइन के तहत दरें राष्ट्रीय राजमार्ग, राज्य मार्ग, नई रोड, रेलवे स्टेशन बस स्टेशन, एयरपोर्ट, अस्पताल, बाजार, नए व्यवस्थित डेवलपमेंट क्षेत्र में बढ़ाई गईं। जानकारी के अनुसार नई दरों से बुधवार से ही रजिस्ट्री होनी थी, लेकिन जिलों को बुधवार को आदेश जारी होने के चलते अब गुरुवार से नई दरों से रजिस्ट्री होगी।

भोपाल जिले की 1443 लोकेशन पर 5 से लेकर 95 फीसदी तक जमीनों के दाम बढ़ाने के कारण अब रजिस्ट्रियां महंगी होंगी। शहर में कोलार रोड, अयोध्या बायपास, सलैया, मिसरोद, अरेरा हिल्स, बावड़िया कलां में प्रॉपर्टी के रेट सबसे ज्यादा बढ़े हैं। कई जगह पर 70 हजार प्रति वर्ग मीटर तक रेट पहुंच गए हैं। ऐसे में प्रॉपर्टी की रजिस्ट्री करने पर स्टॉम्प ड्यूटी के रूप में ज्यादा कीमत चुकानी पड़ेगी। रेट बढ़ाने की वजह मेट्रो, सिक्स लेन जैसे इंफ्रास्ट्रक्चर के बड़े प्रोजेक्ट शामिल हैं। भोपाल के जिला पंजीयक स्वप्नेश शर्मा ने बताया कि आज बुधवार को आदेश जारी कर दिए हैं। नई गाइड लाइन के अनुसार रजिस्ट्री गुरुवार से होगी।

बैरागढ़ में बीआरटीएस कारिडोर हटने से संत कंवरराम चौराहे के सुंदरीकरण की उम्मीद बंधी

कारिडोर निर्माण के समय नगर निगम ने मेन रोड से हटाकर पास में शिफ्ट कर दी थी प्रतिमा। मेन रोड पर स्थापित यह प्रतिमा संत कंवररामजी की विश्व की सबसे बड़ी प्रतिमा है।

भोपाल | संत हिरदाराम नगर (बैरागढ़) मेन रोड से बीआरटीएस कारिडोर हटने के साथ ही अमर बलिदानी संत कंवरराम के नाम से बने चौराहे के सुंदरीकरण की उम्मीद बंधी है। नगर निगम ने कारिडोर निर्माण के समय प्रतिमा को साइड में शिफ्ट कर दिया था, लेकिन वादे के बावजूद चौराहे का सुंदरीकरण नहीं किया।

दरअसल, नगर निगम ने संत कंवरराम चौराहे का सुंदरीकरण कर इसे माडल चौराहा बनाने का प्रस्ताव बनाया था, लेकिन यह प्रस्ताव कभी पूरा नहीं हुआ। यहां सुंदरता के लिए लगाया गया रंगीन पानी का फव्वारा लंबे समय से बंद है। चौराहा तो विकसित नहीं हुआ, अब प्रतिमा की देखरेख भी बंद कर दी गई है। मेन रोड पर स्थापित यह प्रतिमा संत कंवररामजी की विश्व की सबसे बड़ी प्रतिमा है। इसका निर्माण भोपाल विकास प्राधिकरण ने किया था। मेन रोड के बीच रोटरी बनाकर इसे स्थापित किया गया था। बीआरटीएस मार्ग निर्माण के समय मेन रोड को चौड़ा किया गया तो यह प्रतिमा चौड़ीकरण में बाधा बन गई। नगर निगम ने इसे शिव मंदिर गोल चक्रा के पास शिफ्ट किया है। लेकिन प्रतिमा स्थल के आसपास लगातार अतिक्रमण हो रहा है।

अब फिर से बन सकती है रोटरी - सन 2010 तक संत कंवरराम प्रतिमा मेन रोड पर रोटरी के बीच स्थापित थी, इससे वाहन चालकों को भी रोड क्रास करने में सुविधा होती थी। अब कारिडोर हटने के कारण इसे फिर से रोटरी बनाकर रोड के मध्य में स्थापित किया जा सकता है। सिंधु समाज के सचिव पुरषोत्तम हरचंदानी का कहना है कि संत कंवरराम हमारे आराध्य हैं, नगर निगम को चौराहे का नए सिरे से सुंदरीकरण करना चाहिए। इस संबंध में जल्द ही एक शिष्टमंडल द्वारा नगर निगम आयुक्त एवं महापौर से मुलाकात की जाएगी। रोड के बीच में रोटरी बनने से चौराहे पर हो रही दुर्घटनाओं को भी रोका जा सकता है।

मध्य प्रदेश दूसरे चरण की सात सीटों के लिए नामांकन पत्र जमा करने का गुरुवार को अंतिम दिन

रीवा और दमोह से सर्वाधिक 10-10 उम्मीदवारों ने नामांकन पत्र जमा किए, आठ तक वापस ले सकेंगे नाम।

भोपाल | लोकसभा चुनाव के दूसरे चरण में प्रदेश की सात सीटों के लिए नामांकन पत्र जमा करने का गुरुवार को अंतिम दिन रहेगा। दोपहर तीन बजे तक रिटर्निंग अधिकारी के कक्ष में पहुंचने वाल अभ्यर्थियों के ही नामांकन पत्र स्वीकार किए जाएंगे। दूसरे चरण के लिए 28 मार्च से नामांकन पत्र भरने की शुरुआत हुई थी। अभी तक 54 अभ्यर्थियों ने 73 नामाकंन पत्र जमा किए हैं।

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी अनुपम राजन ने बताया कि बुधवार को 33 अभ्यर्थियों ने 46 नामांकन पत्र जमा किए। नामांकन पत्रों की जांच पांच अप्रैल को की जाएगी और अभ्यर्थी आठ अप्रैल तक नाम वापस ले सकेंगे। इसके बाद टीकमगढ़, दमोह, खजुराहो, सतना, रीवा, होशंगाबाद और बैतूल सीट को लेकर दृश्य साफ हो जाएगा। मतदान 26 अप्रैल को होगा।

निर्वाचन आयोग के पोर्टल के अनुसार अभी तक रीवा और दमोह से सर्वाधिक 10-10 उम्मीदवारों ने नामांकन पत्र जमा किए हैं। इसमें रीवा से भाजपा प्रत्याशी जनार्दन मिश्र के अतिरिक्त एक अन्य जनार्दन मिश्र भी शामिल हैं। दमोह में भारत आदिवासी पार्टी और गोंडवाना गणतंत्र पार्टी के उम्मीदवारों ने भी नामांकन पत्र जमा किया है।

सतना सीट से नौ उम्मीदवारों ने नामांकन पत्र जमा किए हैं। बैतूल और नर्मदापुरम सीट से भाजपा और कांग्रेस के उम्मीदवार नामांकन पत्र जमा कर चुके हैं। खजुराहो में भाजपा प्रत्याशी विष्णु दत्त शर्मा का नामांकन पत्र जमा हो चुका है। यहां से सपा उम्मीदवार मीरा दीपक यादव गुरुवार को नामांकन जमा करेंगी। टीकमगढ़ में कांग्रेस ने पंकज अहिरवार को प्रत्याशी घोषित किया है, पर पार्टी ने अरविंद खटीक का भी नामांकन पत्र जमा कराया है।

जलकर जमा करने में पुराने शहर के बाद कोलार के वार्ड भी पिछड़े

शहर को सालभर पानी पिलाने में जल गई सवा सौ करोड़ रुपए की बिजली। पिछले वर्ष से भी कम मिला टैक्स। पूरे साल में 73 करोड़ ही आए।

भोपाल | अब तक पुराने शहर के वार्ड ही नगर निगम को कर न देने के लिए बदनाम थे। लेकिन इस सूची में अब जोन 18 के वार्ड 80 और 82 भी शामिल हो गए हैं। यह वार्ड कोलार इलाके में आते हैं, जहां के रहवासी साल-दर-साल कर देने में पीछे होते जा रहे हैं। वित्तीय वर्ष 2023-24 खत्म होते ही नगर निगम ने जब सालभर हुई जलकर वसूली का मिलान किया तो यह स्थिति सामने आई। इस साल भी नगर निगम को खर्च के मुकाबले 60 करोड़ रुपए कम मिला।

दरअसल राजधानी भोपाल की 25 लाख आबादी को पानी पिलाने के लिए नगर निगम पूरे सालभर में सवा सौ करोड़ रुपए की बिजली जला देता है। इसके बाद पानी को शोधित करने का खर्च, कर्मचारियों का वेतन, ईंधन और मेंटनेंस अलग होता है। लेकिन पूरे सालभर में पानी के घर-घर लगे कनेक्शन के चार्ज के रूप में निगम को मात्र 73 करोड़ 73 लाख रुपए ही मिले। यानी खर्च के मुकाबले लगभग 60 करोड़ रुपए कम। लेकिन ऐसी स्थिति में भी शहरवासियों को पर्याप्त पानी मिलता रहेगा।

वसूली बढ़ी, कहीं घटी भी - नगर निगम के कई वार्डों में इस साल बढ़कर भी वसूली हुई। लेकिन कई वार्ड वसूली में पिछले साल के मुकाबले पिछड़ गए। जोन 20 में 2 करोड़ 88 लाख, बीते साले 2 करोड़ 12 लाख रूपए जमा हुए थे। जोन 5 में 3 करोड़ 9 लाख, जोन 19 में 1 करोड़ 91 लाख, जोन 17 में 3 करोड़ 10 लाख, जोन 21 में 4 करोड़ 68 लाख, जोन 7 में 6 करोड़ 16 लाख, जोन 1 में 2 करोड़ 71 लाख, जोन 15 में 2 करोड़ 40 लाख, जोन 12 में 3 करोड़ 14 लाख, जोन 9 में 4 करोड़ 45 लाख, जोन 14 में 2 करोड़ 62 लाख, जोन 13 में 5 करोड़ 45 लाख, जोन 16 में 4 करोड़ 67 लाख, जोन 11 में 2 करोड़ 82 लाख, जोन 10 में 5 करोड़ 81 लाख, जोन 4 में 1 करोड़ 23 लाख, जोन 3 में एक करोड़ 49 लाख, जोन 6 में 2 करोड़ 68 लाख, जोन 8 में 5 करोड़ 35 लाख, जोन 18 में 4 करोड़ एक लाख, जोन 2 में 3 करोड़ वॉटर टैक्स के रूप में जमा हुए।

माइनस में पहुंचे ये वार्ड - जोन 9 के वार्ड 69 में इस साल 17 हजार 33 रुपए कम वसूली हुई। इसी तरह वार्ड 36 में 20 हजार 980, जोन 10 के वार्ड 49 में एक लाख 35 हजार, जोन 11 के वार्ड 41 में 84 हजार 560, जोन 15 के वार्ड 67 में 99 हजार 919, जोन एक के वार्ड 5 में एक लाख 56 हजार 391, जोन 14 के वार्ड 57 में एक लाख 90 हजार 823, जोन 6 के वार्ड 48 में 2 लाख 69 हजार, जोन 8 के वार्ड 29 में 8 लाख 85 हजार 825, जोन 16 के वार्ड 74 में 4 लाख 45 हजार 731, जोन 3 के वार्ड 12 में 2 लाख 75 हजार, जोन 8 के वार्ड 27 में 4 लाख 39 हजार 117, जोन 18 के वार्ड 82 में 10 लाख 93 हजार 740, जोन 18 के वार्ड 80 में 10 लाख 11 हजार 546, जोन 4 के वार्ड 20 में 4 लाख 6 हजार 215, जोन 13 के वार्ड 53 में 6 लाख 41 हजार 795, जोन 5 के वार्ड 9 में 3 लाख 54 हजार 573 और जोन 2 के वार्ड 7 में 69 लाख 37 हजार 885 रुपए इस साल कम आए।

इनका कहना - नए वित्त-वर्ष में पुराना और नया जल कर वसूलने के लिए हम अभियान चलाएगें। बड़े बकायादारों द्वारा समय पर कर का भुगतान न करने की स्थिति में कनेक्शन काटने की कार्रवाई होगी।
• उदित गर्ग, अधीक्षण यंत्री, भोपाल नगर निगम

मध्य प्रदेश में इंडी गठबंधन दलों की संयुक्त बैठक छह अप्रैल को

मध्य प्रदेश में आम आदमी पार्टी, एनसीपी, सीपीआइ, सीपीआइएम ने एक भी प्रत्याशी खड़ा नहीं किया है, जबकि, कांग्रेस ने समझौते के तहत खजुराहो लोकसभा सीट सपा के लिए छोड़ी है।

भोपाल | लोकसभा चुनाव के लिए बने इंडी गठबंधन में शामिल दल मध्य प्रदेश में मिलकर भाजपा के विरुद्ध चुनाव लड़ने की रणनीति पर काम कर रहे हैं। इसके लिए चर्चा करने को कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी ने समाजवादी पार्टी, आम आदमी पार्टी, सीपीआइ, सीपीआइएम और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) के प्रदेश स्तरीय प्रमुख पदाधिकारियों की संयुक्त बैठक छह अप्रैल को प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय भोपाल में बुलाई है।

उल्लेखनीय है कि मध्य प्रदेश में आम आदमी पार्टी, एनसीपी, सीपीआइ, सीपीआइएम ने एक भी प्रत्याशी खड़ा नहीं किया है, जबकि, कांग्रेस ने समझौते के तहत खजुराहो लोकसभा सीट सपा के लिए छोड़ी है। पहले चरण के नामांकन की प्रक्रिया पूरी हो चुकी है और दूसरे चरण की गुरुवार चार अप्रैल को पूरी हो जाएगी।

कोर्ट में हाजिर न होने पर पूर्व सीएम शिवराज व पूर्व मंत्री भूपेंद्र सिंह के विरुद्ध जमानती वारंट

कांग्रेस के राज्यसभा सदस्य वरिष्ठ अधिवक्ता विवेक कृष्ण तन्खा ने एमपीएमएलए कोर्ट जबलपुर में पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा और पूर्व मंत्री भूपेंद्र सिंह के खिलाफ 10 करोड़ की मानहानि का परिवाद दायर किया था।

भोपाल | एमपीएमएलए स्पेशल कोर्ट में भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष वीडी शर्मा, पूर्व सीएम शिवराज सिंह चौहान व पूर्व मंत्री भूपेंद्र सिंह के विरुद्ध पांच सौ का जमानती वारंट जारी किया गया है। सात जून तक की हाजिरी माफी की मोहलत को घटाकर सात मई तक कर दिया गया है।

सात जून तक व्यक्तिगत उपस्थिति से राहत दे दी थी - उल्लेखनीय है कि एमपी-एमएलए कोर्ट की विशेष न्यायाधीश विश्वेश्वरी मिश्रा ने लोकसभा चुनाव की व्यस्तता के आधार पर पूर्व में सात जून तक व्यक्तिगत उपस्थिति से राहत दे दी थी। साथ ही इस सिलसिले में लिखित अभिवचन प्रस्तुत करने कहा था। किंतु तीनों की ओर से ऐसा नहीं किया गया। लिहाजा, तल्ख़ टिप्पणी करते हुए नई व्यवस्था दे दी गई। दरअसल, इस मामले में तीनों की ओर उपस्थित हुए अधिवक्ताओं को सुना। साथ ही उनकी ओर से प्रस्तुत हाजिरी माफी के आवेदन पर विचार किया।

अगली सुनवाई 23 अप्रैल को निर्धारित कर दी थी - सुनवाई के दौरान पूर्व सीएम शिवराज, वीडी शर्मा व पूर्व मंत्री भूपेंद्र सिंह की ओर से अधिवक्ता श्याम विश्वकर्मा, जीएस ठाकुर, सुधीर नायक व उमेश पांडे ने पक्ष रखा। यह मामला हाई कोर्ट में भी लगा था। न्यायमूर्ति संजय द्विवेदी की एकलपीठ ने तीनों नेताओं को लोकसभा चुनाव की व्यस्तता के आधार पर हाजिरी माफी की व्यवस्था दिए जाने की मांग संबंधी याचिका पर अंतरिम राहत न देते हुए इस सिलसिले में एमपी-एमएलए स्पेशल कोर्ट के समक्ष आवेदन प्रस्तुत करने स्वतंत्र कर दिया था। साथ ही हाई कोर्ट में याचिका की अगली सुनवाई 23 अप्रैल को निर्धारित कर दी थी।

यह है मामला : - उल्लेखनीय है कि कांग्रेस के राज्यसभा सदस्य वरिष्ठ अधिवक्ता विवेक कृष्ण तन्खा ने एमपीएमएलए कोर्ट जबलपुर में पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा और पूर्व मंत्री भूपेंद्र सिंह के खिलाफ 10 करोड़ की मानहानि का परिवाद दायर किया था। परिवाद में कहा गया था कि सुप्रीम कोर्ट में ओबीसी आरक्षण से संबंधित उन्होंने कोई बात नहीं कही थी। उन्होंने मध्य प्रदेश में पंचायत और निकाय चुनाव मामले में परिसीमन और रोटेशन की मांग करते हुए सुप्रीम कोर्ट में पैरवी की थी।

साजिश करते हुए इसे गलत ढंग से पेश किया - सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव में ओबीसी आरक्षण पर रोक लगा दी तो भाजपा नेताओं ने साजिश करते हुए इसे गलत ढंग से पेश किया। पूर्व सीएम शिवराज, वीडी शर्मा और पूर्व मंत्री भूपेंद्र सिंह ने गलत बयान देकर ओबीसी आरक्षण पर रोक का ठीकरा उनके सिर पर फोड़ दिया। जिससे उनकी छवि धूमिल करके आपराधिक मानहानि की है। एमपी एमएलए विशेष कोर्ट ने 20 जनवरी को तीनों के विरुद्ध मानहानि का प्रकरण दर्ज करने के निर्देश दिए थे।

Fatva samachar 05 April 2024_17 feb page-1.qxd 4/3/2024 11:25 PM Page 4

प्रेन्सफल की मानमानी से शिक्षक परेशान

सीएल लगाने के बाद साहब ने थमा दिए कारण बताओं नोटिस...

इनका कहना है

अगर किसी प्रिंसिपल ने शिक्षक की सीएल स्वीकृत कर दी है तो फिर उसे नोटिस जारी नहीं होना चाहिए। अगर गंज प्रिंसिपल ने ऐसा किया है तो गलत किया है इसकी जांच कराई जायेगी।

छतरपुर। विगत कई दिनों से शिक्षा विभाग सुर्खियों में बना हुआ है। किसी न किसी मामले को लेकर यह विभाग विवादों के घेरे में बना रहता है। चाहे वह स्कूलों को लेकर हो या फिर विभाग संबंधी खरीद्दारी को लेकर हो शिक्षा विभाग के अंतर्गत संचालित हो रहे स्कूलों के मामले भी किसी से छुपे नहीं है। प्राईवेट स्कूलों की मनमानी तो दूर की बात शासकीय स्कूल भी अपनी मनमानी से पीछे नही रहते है। अगर बात की जाये जिले में संचालित हो रहे प्राथमिक पाठशाला से लेकर हाईसेण्ड्री स्कूलों की तो यहां पर पदस्थ हेड शिक्षकों द्वारा अपनी मनमानी से स्कूलों को चलाया जाता है। जहां तक की इन स्कूलों में जिनको हेड बनाया जाता है वह अपने अधीनस्थ शिक्षकों पर कहर ढाने में पीछे नहीं रहते हैं। ऐसा ही एक मामला शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय गंज का प्रकाश में आया है। जहां पर प्रेंसफल साहब ने सीएल देने के बाद भी कारण बताओं नोटिस जारी कर दिया है। यह सबकुछ क्यों किया जाता है यह किसी से छुपा नहीं है। आरोप तो यह भी लग रहे है कि जो भी शिक्षक प्रेंसफलों के अनुसार उनके मुखजबानी आदेश का पालन नहीं करते है उनको कारण बताओं नोटिस थमा दिया जाता है। **क्यों करते है नोटिस जारी** जानकारी के अनुसार शासकीय छोटे से बड़े स्कूलों के लिए शिक्षा विभाग ने एक जिला शिक्षा अधिकारी और बीआरसी सहित मॉनिटरिंग करने के लिए सीएसी तक को तैनात कर रखा है। लेकिन जिनके द्वारा मॉनिटरिंग की जाती है वह केवल स्कूलों के हेड मास्टरों तक सीमित रहते है। उनके द्वारा हेड मास्टर से मिलकर स्कूल में पदस्थ शिक्षकों को कैसे परेशान किया जाना है यह योजना बनाने में पीछे नहीं रहते है। बात की जाये गंज के हाई सेकण्ड्री स्कूल की तो यहां पद पदस्थ प्रेंसफल राजकुमार सोनी द्वारा अपने अधिनस्थ शिक्षकों पर बेवजह दबाव बनाया जाता है। यह दबाव उनके मॉनिटरिंग करने वाले द्वारा उनसे बनवाया जाता है। अगर इस दबाव में जो शिक्षक नहीं आते है उनको प्रेंसफल साहब नोटिस जारी कर देते है। विगत माह पहले प्रेंसफल राजकुमार सोनी ने एक शिक्षक की सीएल पास की और उसके एक माह बाद कारण बताओं नोटिस जारी कर दिया। आरोप यह लग रहे है कि जिन शिक्षकों के द्वारा सीएसी और प्रेंसफल से गुडबिल नहीं की जाती है उनको नोटिस थमा दिये जाते है। लेकिन यह मामला तो शासन के नियमानुसार नहीं माना जा रहा है। क्योंकि जिस शिक्षक के पास सीएल है उसको फिर उसी सीएल दिनांक का नोटिस कैसे थमाया जा सकता है। **प्रेंसफल राजकुमार सोनी ने दी सफाई-** जब इस पूरे मामले में शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय गंज के प्रेंसफल राजकुमार सोनी से दूरभाष पर बात की गई तो उनका कहना था कि जो शिक्षक स्कूल समय से नहीं आते है या फिर किसी दिन बगैर बताए छुट्टी पर चले जाते है उनको कारण बताओं नोटिस जारी किया जाता है। जिस एक शिक्षक को नोटिस दिया गया है वह शिक्षक मेरे पास आकर बैक डेट में सीएल पास करा ले गया था। मुझसे यह गलती हुई है कि मेरे द्वारा सीएल पास करते समय दिनांक अंकित नहीं की गई है और बेवजह हम किसी भी शिक्षक को परेशान नहीं करते है जो शिक्षक परेशानी में रहता है उसकी हम मदद करते है। किसी भी शिक्षक के ऊपर हम किसी भी प्रकार का दबाव नहीं बनाते है।

सीएसी बोले मेरा मॉनिटरिंग का है काम

शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय गंज विकास खण्ड राजनगर के बारे में जब सीएसी अखिलेश शुक्ला से दूरभाष पर बात की गई तो उनका कहना था कि मेरा काम मॉनिटरिंग का है किसी भी शिक्षक को नोटिस देने का नहीं है न ही किसी शिक्षक की सीएल पास करने का है और मेरे द्वारा किसी भी प्रेंसफल पर किसी भी प्रकार का दबाव नहीं बनाया जाता है। रही बात लेनदेन की तो मैने किसी भी शिक्षक से पैसे नहीं मांगे है। मेरा काम मॉनिटरिंग का है जो करता हूँ किसी के द्वारा आरोप लगाए जाते है तो वह स्वतंत्र है।

सीएम राइज विद्यालय बैतूल बाजार में प्रवेश हेतु 15 अप्रैल तक कर सकेंगे आवेदन

बैतूल। सी.एम. राईज शासकीय कृषि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैतूल-बाजार में प्रवेश हेतु पालकों के उत्साह को देखते हुए एवं कई स्कूलों के परीक्षाफल घोषित न होने के कारण सत्र 2024-25 में कक्षा 6वीं, 7वी, 9वीं एवं 11वीं हिंदी व अंग्रेजी माध्यम में प्रवेश हेतु आवेदन फार्म प्राप्त करने की तिथि में संशोधन किया गया है। सी.एम. राईज विद्यालय बैतूल-बाजार में आवेदन फार्म 15 अप्रैल तक वितरित किए जाएंगे। आवेदन फार्म वितरण का समय सुबह 11 बजे से दोपहर 2 बजे तक रहेगा। परीक्षा परिणाम घोषित होने के 3 दिवस के भीतर दोपहर 3 से 4:30 बजे तक आवेदन फार्म जमा कर सकेंगे। कक्षावार रिक्तियों की संख्या एवं शेष नियम पूवार्नुसार रहेंगे।

11 मई को आयोजित होगी नेशनल लोक अदालत

शहडोल। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण नई दिल्ली एवं म0प्र0 राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर के निदेर्शानुसार तथा माननीय प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश जिला विधिक सेवा प्राधिकरण शहडोल के अध्यक्ष श्री महेन्द्र कुमार जैन के मार्गदर्शन में जिला न्यायालय शहडोल व तहसील ब्यौहारी, बुढ़ार एवं जयसिंहनगर के सिविल न्यायालयों में 11 मई 2024 को इस वर्ष की दूसरी नेशनल लोक अदालत का आयोजन किया जावेगा। नेशनल लोक अदालत में राजीनामा योग्य दांडिक प्रकरण, सिविल प्रकरण, चेक बाउंस , वैवाहिक एवं पारिवारिक, विद्युत अधिनियम, श्रम अधिनियम, बैंकों एवं वित्तीय संस्थानों, सिविल अपील, मोटर दुर्घटना दावा प्रकरणों, नगरीय निकाय एवं अन्य समस्त समझौता योग्य प्रकरणों का निराकरण किया जायेगा। नेशनल लोक अदालत मं प्रकरणों का निराकरण होने पर नियमानुसार कोर्ट फीस की वापसी का प्रावधान होता है जिससे पक्षकारों के समय के साथ उनके धन की बचत भी होती है। नेशनल लोक अदालत में दोनों पक्षों की जीत होती है और प्रकरण हमेशा के लिये समाप्त हो जाता है। नेशनल लोक अदालत में नगरीय निकाय के प्री-लिटिगेशन प्रकरणों में निम्नानुसार छूट दी जावेगी संपत्तिकर के ऐसे प्रकरण जिनमें कर तथा अधिभार की राशि 50 हजार रुपए तक बकाया है, मात्र अधिभार में 100 प्रतिशत तक की छूट। संपत्तिकर के ऐसे प्रकरण जिनमें कर तथा अधिभार की राशि 50 हजार रुपए से अधिक परंतु 1 लाख रुपए तक बकाया है, मात्र अधिभार में 50 प्रतिशत तक की छूट। संपत्तिकर के ऐसे प्रकरण जिनमें कर तथा अधिभार की राशि 1 लाख रुपए से अधिक बकाया है मात्र अधिभार में 25 प्रतिशत तक की छूट। जलकर एवं उपभोक्ता प्रभार के ऐसे प्रकरण जिनमें कर ,उपभोक्ता प्रभार तथा अधिभार की राशि 10 हजार रुपए तक बकाया है, मात्र अधिभार में 100 प्रतिशत तक की छूट। जलकर एवं उपभोक्ता प्रभार के ऐसे प्रकरण जिनमें कर उपभोक्ता प्रभार तथा अधिभार की राशि 10 हजार रुपए से अधिक परंतु 50 हजार रुपए तक बकाया है, मात्र अधिभार में 75 प्रतिशत तक की छूट। जलकर एवं उपभोक्ता प्रभार के ऐसे प्रकरण जिनमें कर ध्उपभोक्ता प्रभार तथा अधिभार की राशि 50 हजार रुपए से अधिक बकाया है, मात्र अधिभार में 50 प्रतिशत तक की छूट।

मुख्यमंत्री डा. मोहन यादव आज लाल बहादुर शास्त्री स्टेडियम में जनसभा

भाजपा प्रत्याशी डीडी यूके के पक्ष में नामांकन में होगे शामिल

बैतूल। मध्यप्रदेष के मुख्यमंत्री डा. मोहन यादव आज सुबह 9 बजे बैतूल पहुंचेगें सुबह 9.30 बजे बैतूल हरदा हरसूद संसदीय क्षेत्र से भाजपा सांसद प्रत्याषी दुगार्दास उइके के पक्ष में स्थानीय लालबहादूर शास्त्री स्टेडियम में जनसभा को संबोधित करेगें एवं श्री उइके के नामांकन में शामिल होगें। मुख्यमंत्री श्री डा. मोहन यादव की जनसभा को लेकर भाजपा के जिला पदाधिकारियों ,जनप्रतिनिधियों व कार्यकर्ताओ द्वारा विषेष तैयारीयां की जा रही है।

पुलिस ने जिला बदर आरोपी को अवैध कट्टा कारतूस सहित किया गिरफ्तार

छतरपुर। नौगांव। डीआईजी रेंज ललित शाक्यवार एवं पुलिस अधीक्षक अगम जैन, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक विक्रम सिंह के निर्देशन में एवं एसडीओपी नौगांव चंचलेश मरकाम के मार्गदर्शन में नौगांव पुलिस की बड़ी कार्यवाही गंभीर बारदात घटित करने की नियत से घूम रहे जिला बदर के आरोपी को अवैध कट्टा कारतूस सहित गिरफ्तार करने में मिली सफलता। दिनांक 03.04.2024 को देहात भ्रमण के दौरान जरिये मुखबिर सूचना प्राप्त हुई कि ग्राम महतौल में एक व्यक्ति कोई गंभीर बारदात करने की नियत से हाथ में कट्टा लिये घूम रहा है। मुखबिर की सूचना की तस्दीक हेतु मय हमराही बल एवं राहगीर साक्षियों के मुखबिर द्वारा बताये स्थान ग्राम महतौल में जाकर देखा तो एक व्यक्ति पुलिस को आता देखकर बाडे में छुपने का प्रयास करने लगा जिसे हमराह बल एवं साक्षियों की मदद से घेराबंदी कर पकड़ा गया उक्त व्यक्ति से नाम पता पूंछने पर अपना नाम अंकित दुबे उर्फ माफीदार पिता अजय कुमार दुबे उम्र 28 वर्ष निवासी ग्राम महतौल का होना बताया संदेह होने पर उक्त व्यक्ति की तलाशी लेने पर कमर में दाहिने तरफ पेंट में एक 315 बोर का देशी कट्टा खोसे मिला एवं पेंट की बाये जेब में एक 315 बोर का जिन्दा कारतूस रखे मिला । उक्त व्यक्ति से कट्टा कारतूस रखने के संबंध में वैध दस्ताबेज चाहे गये, जिसने कोई दस्ताबेज नही होना बताया । उक्त आरोपी को जिला दण्डाधिकारी जिला छतरपुर के दाण्डिक प्रकरण क्रमाक 90 / जिला बदर / 2023 / दिनांक 09.10.23 के माध्यम से साय 5.00 बजे से 06 माह के लिये छतरपुर जिले एवं समीपवर्ती सीमा पर लगे हुये जिलो की भौगोलिक सीमाओ से निष्काषित करने का आदेश पारति किया गया था। आरोपी का कृत्या धारा 188 भादवि एवं म.प्र. राज्य सुरक्षा अधिनियम 1990 की धारा (5) निरुद्ध धारा 14 एवं 25 / 27 आर्म्स एक्ट के तहत दण्डनीय पाये जाने से आरोपी के विरुद्ध अपराध पंजीबद्ध कर समक्ष साक्षीगणों विधिवत गिरफ्तार कर माननीय न्यायालय पेश किया गया। इस कार्यवाही में निरीक्षक सतीश सिंह थाना प्रभारी नौगांव, बलराम सिंह यादव चौकी प्रभारी लुगासी, प्रआर जितेन्द्र राय, हरीशंकर नायक, लखन लाल, आरक्षक गौरव परमार, पंकज वर्मा, जितेन्द्र अहिरवार की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

अंतर्राज्यीय बॉर्डर मीठी का कमिश्नर ने किया निरीक्षण

शहडोल। कमिश्नर शहडोल संभाग श्री बीएस जामोद एवं एडीजीपी श्री डीसी सागर ने जनपद पंचायत जयसिंहनगर के अंतर्गत अंतर्राज्यीय बॉर्डर मीठी का निरीक्षण किया तथा अवश्यक निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान अधिकारियों एवं कर्मचारियों को मतदान करने की शपथ भी दिलाई । इस अवसर पर अनुविभागीय अधिकारी राजस्व श्रीमती प्रगति वर्मा, श्री नरेंद्र सिंह, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत श्री अशोक मरावी सहित अन्य लोग उपस्थित थें।

भगवान आदिनाथ के जन्म एवं तप कल्याण पर हुआ पूजन विधान

छतरपुर। जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ भगवान का जन्म और तप कल्याण के उपलक्ष्य में बुधवार 3 अप्रेल को प्रातः बड़े जी मे आदिनाथ भगवान जी की शांति धारा,अभिषेक आदिनाथ विधान और 48 रजत दीपको से आरती की गई । सखी महिला परिषद की सचिव श्रीमती प्रीति जैन ने बताया कि आदिनाथ भगवान का के जन्म का पालन सखी महिला परिषद की बहनों के द्वारा सजाया गया। समाज के सभी पुरुष एवं महिला वर्ग ने बड़ी उत्साह पूर्वक एवं धूमधाम से यह पर्व मनाया इस कार्यक्रम में उपाध्यक्ष रितेश जैन,विमल जैन सुरेंद्र दादा, संतोष पहलवान,राहुल कुपी ओर समाज के वरिष्ठ लोग उपस्थित रहे।सखी महिला परिषद की संभागीय अध्यक्ष श्रीमती ममता जैन,संभागीय सचिव करुणा,जैन अध्यक्ष श्रीमती रेशम जैन, सचिव श्रीमती प्रीतिजैन,कोषाध्यक्ष श्रीमतीसविता जैन, सृष्टि जैन, राखी जैन,रचना जैन,सुमन जैन और सखी परिषद की सारी बहनें उपस्थिति रही और इस प्रोग्राम उत्साह पूर्वक धूमधाम से मनाया गया।

मध्य प्रदेश में पूर्व विधायक लक्ष्मण तिवारी ने थामा कांग्रेस का हाथ, कहा- घर वापसी की

रीवा। भोपाल। कांग्रेस छोड़कर भाजपा में जाने के सिलसिले के बीच सोमवार को रीवा में आने वाले मऊगंज विधानसभा के पूर्व विधायक लक्ष्मण तिवारी ने कांग्रेस का हाथ थाम लिया। प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय में आयोजित कार्यक्रम में प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने उन्हें सदस्यता दिलाई। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि मैंने घर वापसी की है। पहले कांग्रेस में था और फिर उमा भारती के अनुरोध पर उनके साथ चला गया था। आज कांग्रेस को मजबूत करने की जरूरत है। तिवारी ने पहले सवर्ण समाज पार्टी भी बनाई थी, बाद में खुद ही पार्टी छोड़ दी थी। 2008 में उमा भारती ने भाजपा से अलग होकर भारतीय जनशक्ति पार्टी बनाई थी। इसी वर्ष हुए चुनाव में पांच विधानसभा सदस्य चुने गए। 2011 में इसका भाजपा में विलय हो गया और विधानसभा में इसके सभी सदस्य भाजपा के सदस्य हो गए। पार्टी ने लक्ष्मण तिवारी को 2013 में विधानसभा का चुनाव लड़ाया, पर वे हार गए।2018 में उन्हें टिकट नहीं दिया गया तो निर्दलीय चुनाव लड़ा। 2023 का चुनाव समाजवादी पार्टी से चुनाव लड़ा था, लेकिन फिर हार गए। अब उन्होंने कांग्रेस की सदस्यता ली है। उन्होंने कहा कि भाजपा दल नहीं दलदल वाली पार्टी बन गई है। भाजपा में लोग अपनी संपत्ति बचाने के लिए जा रहे हैं, कुछ बिक रहे हैं तो कुछ को खरीदा जा रहा है। देश की जनता के हित के लिए आज लड़ाई लड़ने की जरूरत है और कांग्रेस के बैनर के साथ ही लड़ाई लड़ी जा सकती है। वहीं, जीतू पटवारी ने कहा कि भाजपा केवल झूठ बोलती है। प्रदेश की बहनों को एक हजार और फिर तीन हजार रुपये देने की बात की थी, लेकिन सरकार बहनों के साथ धोखा कर रही है। आज घर के राशन की लागत पांच गुना बढ़ गई है।किसानों की आय दोगुनी करने के बजाय उनकी फसल का उचित मूल्य तक नहीं मिल रहा है। प्रदेश कांग्रेस मीडिया विभाग के अध्यक्ष मुकेश नायक ने भी कहा कि भाजपा में जाने वाले की वहां कोई पूछपरख नहीं है। वे तो केवल अपनी संपत्ति बचाने और डर के कारण भाजपा में जा रहे हैं।

11 वर्ष से फरार अपराधी को जिला नूंह हरियाणा से किया गिरफ्तार

अपराधी 2013 में दर्ज बलात्कार एवं पोक्सो एक्ट के अपराध में था वांछित

पाली। जिला पाली पुलिस अधीक्षक चुनाराम जाट,ने बताया कि आगामी लोक सभा चुनाव 2024 को निष्पक्ष एवं शान्तिपूर्ण तरीके से कराए जाने हेतु वांछित अपराधियों की धरपकड़ हेतु विशेष अभियान चलाया गया है। इन वांछित अपराधियों में विभिन्न प्रकरणों में वांछित, स्थाई वारण्टी, मफरूरी, उद्घोषित अपराधी इत्यादि शामिल है। इस प्रयोजन से पुलिस थाना रानी में वांछित अपराधियों की धरपकड़ एवं गिरफ्तारी हेतु , चेनसिंह महेचा, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, बाली जिला बाली व , राजेश यादव, वृताधिकारी, वृत बाली जिला पाली के निर्देशन में , पन्ना राम, थानाधिकारी रानी के नेतृत्व में एक विशेष टीम का गठन किया गया तथा टीम को ऐसे अपराधियों की धरपकड़ हेतु आसूचना संकलन के निर्देश दिए। इसी परिप्रेक्ष्य में पुलिस थाना रानी, जिला पाली के प्रकरण संख्या 155/2013 में अव्यस्क लड़की के अपहरण, बंधक बनाने, दुष्कर्म करने इत्यादि में खालिद नामक युवक भी वांछित था, जिस सम्बंध में आसूचना संकलन की गई। इस विशेष टीम द्वारा नूंह जिले की अपराध शाखा के साथ समन्वय स्थापित कर अपराधी के संबंध में प्राप्त आसूचना को उनके साथ साझा किया गया। जिस पर हरियाणा के नूंह जिले की अपराध शाखा द्वारा अपराधी खालिद पुत्र महमूद खाँ निवासी वार्ड संख्या 5, फिरोजपुर झिरका जिला नूंह, हरियाणा को दस्तयाब कर थाना रानी को सूचना दी। थाना रानी की टीम द्वारा फिरोजपुर झिरखा, नूंह पहुंच अपराधी को गिरफ्तार कर थाना रानी, जिला पाली लेकर आए जिससे आवश्यक अनुसंधान कर न्यायालय में पेश किया जाएगा। **गिरफ्तार मुजरिम-** खालिद पुत्र महमूद खाँ निवासी वार्ड संख्या 5, फिरोजपुर, पुलिस थाना फिरोजपुर झिरका, जिला नूंह, हरियाणा **पुलिस टीम के सदस्य-** पन्ना राम उप निरीक्षक, थानाधिकारी रानी। प्रहलाद नारायण सहायक उप निरीक्षक। अशोक कानि. 1596। भगवानसिंह कानि. 88।

सुरक्षा परिषदों के सचिवों की बैठक में बोले अजीत डोभाल

अफगानिस्तान में आतंकवाद का नेटवर्क चिंता का विषय

अस्ताना। कजाकिस्तान की राजधानी अस्ताना में शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के सदस्य देशों की सुरक्षा परिषदों के सचिवों की 19वीं बैठक आयोजित की जा रही है। इस बैठक की अध्यक्षता कजाकिस्तान कर रहा है। इसमें ईरान पहली बार एससीओ में पूर्ण सदस्य के रूप में भाग ले रहा है। भारत की तरफ से राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल ने बैठक में हिस्सा लिया। अपनी यात्रा के दौरान एसएसए अजीत डोभाल ने कजाकिस्तान के राष्ट्रपति कासिम जोमार्ट तोकायेव से भी मुलाकात की। एससीओ की सुरक्षा परिषद के सचिवों की 19वीं बैठक में अपने संबोधन के दौरान अजीत डोभाल ने 22 मार्च मॉस्को के क्रोकस सिटी हॉल में हुए आतंकी हमले की कड़ी निंदा की है और घटना के पीड़ितों के परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त की है।

बैठक में अजीत डोभाल ने रूसी एनएसए पत्रुशेव को आतंकवाद के खतरे से निपटने के लिए रूसी सरकार और लोगों के साथ भारत की एकजुटता से अवगत कराया है। बैठक में एनएसए अजीत डोभाल ने बताया कि सीमा पर आतंकवाद समेत किसी भी व्यक्ति द्वारा कहीं भी और किसी भी उद्देश्य से किया गया आतंक का कोई भी कृत्य उचित नहीं है। सीमा पार आतंकवाद में शामिल लोगों समेत आतंकवाद के अपराधियों से प्रभावी ढंग से और शीघ्रता से निपटा जाना चाहिए।

ताइवान में 7.7 तीव्रता का भूकंप

सात की मौत, अनुमान: 700 से ज्यादा लोग घायल

ताइपे। ताइवान में बुधवार सुबह जोरदार भूंकप आया है। अमेरिकी भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (यूएसजीएस) के मुताबिक भूकंप की तीव्रता 7.7 आंकी गई है। भूकंप के झटकों से शहर के कई हिस्सों में बिजली गुल हो गई। दक्षिणी जापान और फिलीपींस के द्वीपों के लिए सुनामी की चेतावनी जारी कर दी गई है।

ताइवान के अधिकारियों का कहना है कि भूकंप के कारण फोन नेटवर्क पूरी तरह खराब हो गए है, जिसके चलते कई लोगों से संपर्क टूट गया है। मिनी बस में सवार 50 लोगों से भी संपर्क टूट गया है। ताइवान में भूकंप के बाद सामने कुछ तस्वीरें आई हैं। इन तस्वीरों से साफ पता चलता है कि भूकंप कितनी तेज तीव्रता का आया होगा। भूकंप के बाद मरने वालों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। ताइवान सरकार ने बताया कि मरने वालों की संख्या बढ़कर सात हो गई है। वहीं, घायलों की संख्या भी 700 से अधिक हो गई है सना हाशमी ने कहा कि प्राधिकरण ने भूकंप के हालातों से निपटने के लिए जल्द कदम उठाए। कुछ क्षेत्रों में कुछ घंटों के लिए बिजली चली गई थी। मेट्रो, हाईस्पीड ट्रेन फिर से शुरू कर दी गई है। जहां ताइपे जैसे हालात नहीं हैं, वहां काफी हद तक जीन सामान्य हो गया है।

ताइवान-एशिया एक्सचेंज फाउंडेशन की सना हाशमी ने कहा कि भूकंप के झटके सुबह-सुबह महसूस किए। जिस समय भूकंप आया उस समय हम घर पर ही थे। ताइवान में भूकंप आना आम हैं, लेकिन आज का भूकंप अलग था। उन्होंने कहा कि भूकंप के तेज झटके महसूस किए गए। ह्यूलिन और ताइपे जैसी जगहों से आने वाली तस्वीरें डरावनी हैं। ताइवान के पूर्वी हिस्से में आए भूकंप के बाद न्यू ताइपे शहर में एक क्षतिग्रस्त इमारत में फंसे एक व्यक्ति को जिंदा बचाया। ढही इमारतों में जिंदा बचे लोगों की आपातकालीन कर्मचारी तलाश कर रहे हैं। न्यू ताइपे शहर के झिंडियन जिले में इमारतों को नुकसान पहुंचा। बचावकर्मी फंसे हुए लोगों की तलाश कर रहे हैं। क्षतिग्रस्त इमारत से बचाए जाने के बाद एक व्यक्ति की सहायता करते बचाव कर्मचारी।

ट्रंप ने संसद से सख्त कानून लाने का किया आग्रह, कहा-

पुलिस की हत्या करने वालों को तुरंत मिले मृत्युदंड

वॉशिंगटन। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप अक्सर अपने विवादित बयानबाजी के लिए चर्चाओं में बने रहते हैं। अब उन्होंने जासूस जोनाथन डिलर की हत्या पर गुस्सा जाहिर करते हुए पुलिस के हत्यारों के लिए अनिवार्य मौत की सजा का आह्वान किया है। उन्होंने संसद से ऐसा कानून लाने का आग्रह किया है कि पुलिस अधिकारियों की हत्या के दोषियों को तुरंत मृत्युदंड की सजा दी जाए। दरअसल, पूर्व राष्ट्रपति विस्कॉन्सिन के ग्रीन बे में एक अभियान रैली में शामिल हुए थे। इस दौरान उन्होंने संसद से सख्त कानून लाने की मांग की। उन्होंने कहा, मैं संसद से मेरे पास एक विधेयक भेजने के लिए कहूंगा, जिसमें यह सुनिश्चित किया जाएगा कि पुलिस अधिकारी की हत्या करने वाले किसी भी व्यक्ति को तुरंत मौत की सजा मिले। हम ऐसा करने जा रहे हैं और फिर आप पूरी स्थिती देखेंगे। 31 साल के डिलर फॉर रॉकवे पर यातायात की निगरानी कर रहे थे। तभी गलत तरीके से खड़े किए गए वाहन से टकराने के बाद उन्हें गोली मार दी गई थी। बाद में 34 साल के संदिग्ध रिवेरा को गिरफ्तार कर लिया गया और उस पर एक पुलिस अधिकारी की हत्या, हत्या के प्रयास और हथियार रखने का आरोप लगाया गया। ट्रंप ने डिलर की पत्नी और प्रियजनों के बारे में कहा, %उनका पूरा परिवार बहुत ही अच्छा है। इसे बताना बहुत कठिन है कि सबकुछ कितना अच्छा था। उनकी हत्या की खबर बहुत ही दुख देने वाली है। यह घटना परिवार और पुलिस अधिकारियों के लिए डरावनी है। उन्होंने कहा कि डिलर के अंतिम दर्शन के लिए हजारों पुलिस कर्मचारी और महिलाएं पहुंचे, यह देखना वाकई अच्छा था। इससे पहले पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने राष्ट्रपति जो बाइडन से जुड़ा एक वीडियो सोशल मीडिया पर साझा किया था।

अरिंदम बागची ने टेड्रोस से की मुलाकात

अर्थव्यवस्थाओं में सुरक्षा खतरों पर षणमुगम ने जताई चिंता

जेनेवा। संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी प्रतिनिधि अरिंदम बागची ने मंगलवार को जिनेवा में विश्व स्वास्थ्य संगठन के महानिदेशक टेड्रोस अदनोम घेब्रेयसस से मुलाकात की। इस दौरान दोनों के बीच वैश्विक स्वास्थ्य में भारत-डब्ल्यूएचओ के सहयोग क्षेत्रों पर चर्चा हुई। बागची ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर कहा, विश्व स्वास्थ्य संगठन के साथ भारत के संबंधों को मजबूत कर रहे हैं! भारत के स्थायी मिशन ने लिखा, अरिंदम बागची ने डब्ल्यूएचओ के घ्रेब्रेयसस से मुलाकात की। इस दौरान दोनों ने चिकित्सा और डिजिटल स्वास्थ्य सहित वैश्विक स्वास्थ्य में भारत-डब्ल्यूएचओ के सहयोग क्षेत्र पर चर्चा की। इससे पहले अक्तूबर में, भारत के स्थायी प्रतिनिधि अरिंदम बागची को जिनेवा में संयुक्त राष्ट्र और अन्य अंतरराष्ट्रीय संगठनों में भारत का अगला स्थायी प्रतिनिधि नियुक्त किया गया था। फरवरी में, बागची ने संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार उच्चायुक्त वोल्कर तुर्क से मुलाकात की और आपसी हित के कई मुद्दों पर चर्चा की थी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लुइस मोंटेनेग्रो को पुर्तगाली गणराज्य के प्रधानमंत्री के रूप में शपथ लेने पर बधाई दी। उन्होंने कहा, हमारे दीर्घकालिक द्विपक्षीय संबंधों को और मजबूत करने के लिए साथ मिलकर काम करने को लेकर आशान्वित हूं।

मिलिपोल एशिया-प्रशांत और टेकएक्स शिखर सम्मेलन में सिंगापुर के कानून और गृह मामलों के मंत्री के. षणमुगम ने बुधवार को चेतावनी दी कि जैसे-जैसे क्षेत्र में आर्थिक अवसर बढ़ेंगे, तकनीक सक्षम अपराधों और सुरक्षा खतरों की संख्या भी बढ़ेगी।

इमरान के वकील का अदालत से आग्रह- आजम खान की गवाही को नजरअंदाज करें

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान के वकील ने इस्लामाबाद उच्च न्यायालय से आग्रह किया कि वह राजनयिक गोपनीय केबल लीक मामले में उनके पूर्व सहयोगी आजम खान की गवाही को नजरअंदाज करे। इसके पीछे उन्होंने दलील दी कि यह गवाही संदिग्ध परिस्थितियों में दर्ज की गई थी। मामले पर उच्च न्यायालय (आईएचसी) के मुख्य न्यायाधीश आमिर फारूक और न्यायमूर्ति मियांगल हसन औरंगजेब की खंडपीठ मंगलवार को सुनवाई कर रही थी। इमरान के वकील सलमान सफदर ने दलील दी कि आरोपी आजम खान जून 2023 में लापता हो गए थे। तब इमरान के पूर्व प्रमुख सचिव ने अपना इकबालिया बयान (कबूलनामा) दर्ज करने के बजाय एक जांच अधिकारी और मजिस्ट्रेट के सामने उनके खिलाफ गवाही दी। आजम खान खान कभी पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) पार्टी के संस्थापक करीबी रहे थे। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, उच्च न्यायालय इमरान खान और पूर्व विदेश मंत्री शाह महमूद कुरैशी की उन याचिकाओं पर सुनवाई कर रहा था, जो राष्ट्र हितों को नुकसान पहुंचने के लिए एक गोपनीय राजनयिक पत्र के दुरुपयोग के लिए उन्हें दोषी ठहराए जाने के खिलाफ दायर की गईं थीं।

निर्दलीय मैदान में उतरेंगे संजय निरुपम?

कांग्रेस को नसीहत देने हुए कहा- अपनी बची-खुची ऊर्जा पार्टी को बचाने के लिए करें

नई दिल्ली। कांग्रेस ने आगामी लोकसभा चुनाव के लिए महा विकास अघाड़ी सहयोगी शिवसेना (यूबीटी) के साथ सीट साझा करने की बातचीत के बीच पार्टी नेतृत्व के खिलाफ की गई टिप्पणी को लेकर मुंबई इकाई के पूर्व प्रमुख संजय निरुपम के खिलाफ बुधवार को अनुशासनात्मक कार्रवाई शुरू की।

महाराष्ट्र कांग्रेस प्रमुख नाना पटोले ने कहा कि पार्टी ने पूर्व सांसद को स्टार प्रचारकों की सूची से हटा दिया है। पटोले के हवाले से कहा गया कि पार्टी ने स्टार प्रचारकों की सूची से निरुपम का नाम हटा दिया है और पार्टी और राज्य इकाई नेतृत्व के खिलाफ उनके बयानों के लिए उनके खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई शुरू की गई है। एक या दो दिन में निर्णय लिया जाएगा। संजय निरुपम ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा है कि कांग्रेस पार्टी मेरे लिए ज़्यादा ऊर्जा और स्टेशनरी नष्ट ना करे। बल्कि अपनी बची-खुची ऊर्जा और स्टेशनरी का इस्तेमाल करे,पार्टी को बचाने के लिए करे। वैसे भी पार्टी भीषण आर्थिक संकट के दौर से गुजर रही है। निरुपम ने मुंबई की छह लोकसभा सीटों में से चार पर उम्मीदवारों की घोषणा के बाद राज्य कांग्रेस नेतृत्व पर जमकर हमला बोला था, जिसमें मुंबई उत्तर पश्चिम सीट भी शामिल थी, जिस पर उनकी नजर है। निरुपम ने कहा था कि कांग्रेस नेतृत्व को खुद को शिवसेना (यूबीटी) के हाथों झुकने की इजाजत नहीं देनी चाहिए।

महेश शर्मा की नजर लगातार तीसरी जीत पर

नई दिल्ली। उत्तर प्रदेश के गौतमबुद्ध नगर सीट से बीजेपी उम्मीदवार महेश शर्मा के नामांकन दाखिल किया। इस दौरान डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक और विधायक पंकज सिंह भी मौजूद रहे। नामांकन के बाद उन्होंने कहा कि मैं पार्टी नेतृत्व को धन्यवाद देना चाहता हूं, उन्होंने मुझे पांचवीं बार टिकट दिया है, यह मेरे निर्वाचन क्षेत्र के लोगों के स्नेह और प्यार को दर्शाता है। पीएम मोदी के नेतृत्व और सुशासन के तहत जो विकासात्मक कार्य हुए हैं और इसलिए मैं चाहूंगा कि मेरी पार्टी नेतृत्व को विश्वास हो कि हम यह सीट और भी बड़े अंतर से जीतेंगे। यूपी के डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक ने कहा कि यहां इस सीट पर चुनाव पीएम मोदी द्वारा सामाजिक कल्याण और बुनियादी ढांचे में किए गए कार्यों के कारण महेश शर्मा के पक्ष में एकतरफा है। उन्होंने कहा कि यूपी में पीएम मोदी की लहर के साथ गठबंधन एक फ्लॉप शो है। समाजवादी पार्टी ने जिस तरह से प्रदेश में शासन किया उसे जनता ने पूरी तरह से नकार दिया है। हम राज्य की सभी 80 सीटें जीतेंगे। समाजवादी पार्टी को उम्मीदवार नहीं मिल रहे हैं और पार्टी के लोग चुनाव लड़ने से इनकार कर रहे हैं।

बीजेपी को तमिलनाडु की कोई समझ नहीं, कच्चाथीवू विवाद पर कार्ति चिदंबरम ने क्या कहा?

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा कच्चाथीवू मुद्दा उठाए जाने के बाद बीजेपी और कांग्रेस के बीच इसको लेकर राजनीतिक विवाद छिड़ गया है।

कांग्रेस नेता कार्ति चिदंबरम ने कहा कि भावनात्मक मुद्दे भाजपा की मदद नहीं करेंगे, उन्होंने कहा कि पार्टी को तमिलनाडु की कोई समझ नहीं है। चिदंबरम ने आगामी चुनावों के बारे में, तमिलनाडु में इंडिया ब्लॉक की संभावनाओं के बारे में और राज्य में भाजपा की पैठ बनाने की कोशिश के बारे में बात की। पीएम मोदी ने कच्चातिवु मामले को लेकर कांग्रेस के साथ-साथ तमिलनाडु में सत्तारूढ़ द्रविड़ मुनेत्र कड़गम (डीएमके) पर भी निशाना साधा और कहा कि कांग्रेस ने 1974 में संवेदनहीनता से यह द्वीप श्रीलंका को दे दिया था। पीएम मोदी ने कच्चाथीवू द्वीप विवाद को उठाया जब उन्होंने एक्स पर पोस्ट करते हुए कहा कि नए तथ्यों से पता चलता है कि कैसे कांग्रेस ने बेरहमी से सकच्चथीवु को छोड़ दिया। इससे हर भारतीय नाराज है और लोगों के मन में यह बात बैठ गई है कि हम कांग्रेस पर कभी भरोसा नहीं कर सकते!

न्यायपालिका की आजादी पर हमला बर्दाश्त नहीं, खुफिया एजेंसियों की दखलअंदाजी के आरोपों पर बोले सीजेपी

इस्लामाबाद। पाकिस्तान की न्यायपालिका इन दिनों चर्चा का विषय बनी हुई है। इस बीच देश के मुख्य न्यायाधीश (सीजेपी) काजी फैज ईसा ने बुधवार को कहा कि न्यायपालिका की आजादी पर किसी भी तरह के हमले को विफल किया जाएगा। उन्होंने इस बात का भी संकेत दिया कि न्यायिक मामलों में खुफिया एजेंसियों की कथित दखलंदाजी की पूर्ण अदालत सुनवाई करेगी। दरअसल, मंगलवार को इस्लामाबाद उच्च न्यायालय के छह न्यायाधीशों ने दावा किया कि उन्हें धमकी भरे पत्र मिले और इन पत्रों में मादक पदार्थ भेजा गया था। इन न्यायाधीशों ने सीजेपी को पत्र लिखा था। शीर्ष अदालत की सात सदस्यीय पीठ इस मामले पर सुनवाई कर रही है। सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश तसादुक हुसैन जिलानी ने खुफिया एजेंसियों की कथित दखलंदाजी की जांच के लिए गठित एक सदस्यीय जांच आयोग की अध्यक्षता से खुद को अलग कर दिया था।

सुनवाई के दौरान अटॉर्नी जनरल मंसूर अवान ने कहा, सरकार ने पूरी ईमानदारी से मामले की जांच के लिए एक आयोग का गठन किया था। लेकिन सोशल मीडिया और वकीलों ने उस आयोग की आलोचना की। वह चाहते थे कि अदालत मामले की सुनवाई करे। सीजेपी ईसा ने कहा कि वह अपने संस्थान की आजादी को बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने कहा, न्यायाधीशों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे खतरे में नहीं हैं। सीजेपी ने कहा, अगर न्यायपालिका की आजादी पर किसी तरह का हमला होता है, तो मैं (न्यायपालिका का बचाव करने में) सबसे आगे रहूंगा और निश्चित तौर पर मेरे साथी न्यायाधीश इसमें मेरे साथ खड़े रहेंगे और हम कभी भी दखलंदाजी को स्वीकार नहीं करेंगे।

कांग्रेस पर नहीं है ज्यादा भरोसा

इस रणनीति के तहत बिहार में एनडीए को पस्त करेंगे लालू यादव

नई दिल्ली। बिहार एनडीए और इंडिया ब्लॉक दोनों ने अपने सीट-बंटवारे के फॉर्मूले की घोषणा कर दी है। एनडीए ने तो अपने उम्मीदवारों का ऐलान कर दिया है। वहीं, इंडिया ब्लॉक ने भी करीब-करीब प्रत्याशियों से पर्दा हटा दिया है। बिहार में एनडीए और इंडिया ब्लॉक के बीच सीधा मुकाबला है। एनडीए ने 2019 के चुनावों में 40 में से 39 सीटें जीती थीं, ज्यादातर मौजूदा सांसदों पर निर्भर है। राजद प्रमुख लालू प्रसाद अपेक्षित रूप से इंडिया ब्लॉक में सबसे ज्यादा ताकतवर दिखाई दे रहे हैं।

ऐसा लगता है कि राजद को अपने सहयोगी कांग्रेस पर भी भरोसा नहीं है। लालू यादव लगातार गठबंधन के भीतर शर्तों को निर्धारित कर रहे हैं। महत्वपूर्ण बात यह भी है कि लालू ने राजद के पारंपरिक मुस्लिम-यादव वोट आधार से आगे बढ़कर 'BAAP' - या बहुजन (पिछड़े) -अगड़ा (अगड़े) - आधी आबादी (महिला) और गरीबों तक जाने की कोशिश की है।

ऑस्ट्रेलियन प्रधानमंत्री बोले- यह अस्वीकार्य है

गाजा में इस्राइली हमले में ऑस्ट्रेलियाई नागरिक की मौत

तेल अवीव। इस्त्राइल और हमास के बीच गाजा में युद्ध जारी है। इस बीच एक इस्त्राइली हवाई हमले में सात सहायता कर्मियों की मौत हो गई। इन्हीं मृतकों की सूची में एक नाम जोमी फ्रैंककॉम (43) का भी है, जो वर्ल्ड सेंट्रल किचन के छह अंतरराष्ट्रीय सहायता कर्मियों में से एक था। ऑस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्री एंथनी अल्बानीज ने हमले की पुष्टि की है। बता दें, फ्रैंककॉम के पिता ऑस्ट्रेलियाई नागरिक थे तो वहीं उनकी माता भारत के मिजोरम राज्य की थी। ऑस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्री अल्बानीज ने फ्रैंककॉम की मौत के लिए इस्त्राइली सरकार को जवाबदेह माना है। उन्होंने कहा कि फ्रैंककॉम गाजा में चैरिटी के लिए स्वेच्छा से काम कर रहा था। सहायता कर्मियों की मौत होना पूरी तरीके से अस्वीकार्य है। इसके अलावा, इस्त्राइली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने भी यह स्वीकार किया है कि इस्त्राइली सुरक्षा बलों के हमले में सात सहायता कर्मियों की भी मौत हुई है। उन्होंने कहा कि दुर्भाग्य से गाजा पट्टी में निर्दोष लोगों पर हमला हुआ है। हमारी सेना से यह हमला अनजाने में हुआ है। भविष्य में यह गलती न हो, इसका पूरा ध्यान रखा जाएगा। गाजा में स्थापित फूड चैरिटी के संस्थापक और सेलेब्रिटि शेफ जोस एंड्रेस ने कहा कि हम क्षेत्र में अपने परिचालन को तुरंत निलंबित कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि हमने आईडीएफ के साथ समन्वय किया था। बावजूद इसके हमारे काफिले पर हमला हुआ।

अबू धाबी के हिंदू मंदिर में श्रद्धालुओं का तांता, महीने भर में 3.5 लाख से अधिक भक्तों ने किए दर्शन

अबू धाबी। राजस्थान के गुलाबी बलुआ पत्थरों से निर्मित अबूधाबी का पहला हिंदू मंदिर आम लोगों के लिए बीते माह खोल दिया गया था। इस मंदिर की भव्यता का पता इसी से लगाया जा सकता है कि एक महीने के भीतर यहां 3.5 लाख से अधिक श्रद्धालु पहुंचे।

दरअसल, इस मंदिर का उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने फरवरी में बसंत पंचमी के दिन किया था और एक मार्च को आगंतुकों के लिए खोल दिया गया था। मंदिर के एक प्रवक्ता ने बताया, %पहले महीने में करीब साढ़े तीन लाख भक्त दर्शन करने के लिए आए थे। इनमें से 50,000 प्रत्येक सप्ताहांत (शनिवार-रविवार) का दौरा करते थे। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि सोमवार को मंदिर निजी प्रार्थना आयोजित करता है और आगंतुकों के लिए बंद रहता है। इसका मतलब है कि मार्च में 31 दिनों में से केवल 27 दिन ही आमजन मंदिर में दर्शन कर सके।%

उन्होंने कहा, %मंगलवार से रविवार तक हर शाम साढ़े सात बजे स्वामीनारायण घाट के तट पर गंगा आरती होती है। बता दें इस घाट को भारत से लाए गए गंगा और यमुना के पवित्र जल का उपयोग करके बनाया गया है।

भव्य मंदिर का उद्घाटन 14 फरवरी को एक समारोह के दौरान किया गया था, जिसमें 5,000 से अधिक आमंत्रित लोगों ने भाग लिया था। अबू धाबी स्थित पहले हिंदू मंदिर की वास्तुकला में यूएई के सात अमीरातों का प्रतिनिधित्व करने वाली सात मीनारें, ऊंटों की नक्काशी और राष्ट्रीय पक्षी बाज भी हिस्सा हैं। मंदिर का निर्माण बीएपीएस स्वामीनारायण संस्था ने दुबई-अबू धाबी शेख जायद राजमार्ग पर अल रहबा के पास अबू मुरीखा में 27 एकड़ स्थल पर लगभग 700 करोड़ रुपये की लागत से किया है। खास बात है कि मंदिर के लिए जमीन यूएई सरकार ने दान में दी थी।

बीएपीएस के अंतरराष्ट्रीय संबंधों के प्रमुख स्वामी ब्रह्मविहरिदास के मुताबिक, मंदिर में सात शिखर बनाए गए हैं। ये सात अमीरातों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो संयुक्त अरब अमीरात बनाने के लिए एक साथ आते हैं। सात शिखरों पर भगवान राम, भगवान शिव, भगवान जगन्नाथ, भगवान कृष्ण, भगवान स्वामीनारायण, तिरूपति बालाजी और भगवान अयप्पा सहित देवताओं की मूर्तियां हैं।

Fatva samachar 05 April 2024_17 feb page-1.qxd 4/3/2024 11:25 PM Page 6

कैंसर से लड़ेंगी प्रतिरोधी कोशिकाएं

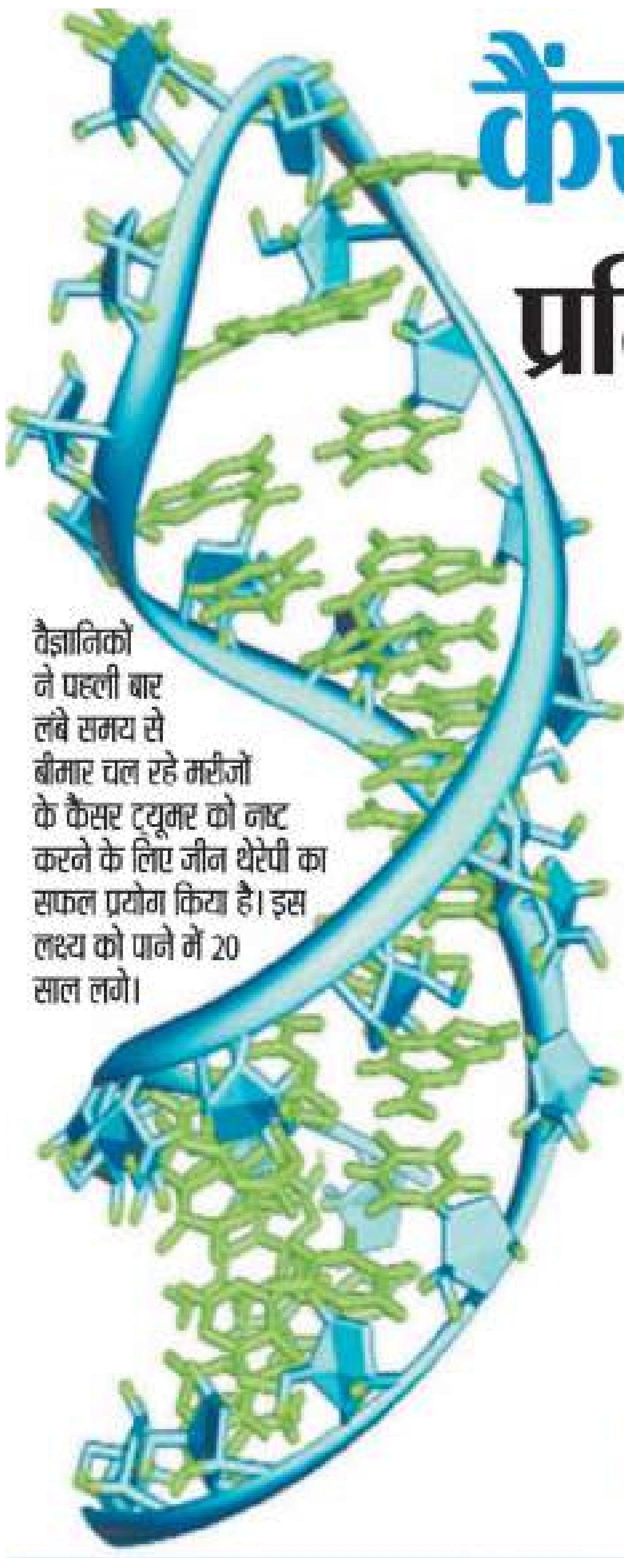

वैज्ञानिकों ने पहली बार लंबे समय से बीमार चल रहे मरीजों के कैंसर ट्यूमर को नष्ट करने के लिए जीन थेरेपी का सफल प्रयोग किया है। इस लक्ष्य को पाने में 20 साल लगे।

अमेरिका में पेनसिल्वेनिया विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने पैथोजन से लड़ने वाले मरीजों की अपनी टी कोशिकाएं बनाई, जिसका लक्ष्य ल्यूकिमिया कोशिकाओं की सतह पर मिले कणों से लड़ना था। बदली हुई टी कोशिकाओं को शरीर के बाहर विकसित किया गया और उसके बाद क्रोनिक लिम्फोसाइटिक ल्यूकिमिया से बीमार मरीजों के शरीर में वापस डाला गया। यह बीमारी खून और बोन मैरो को प्रभावित करती है और ल्यूकिमिया का बहुत आम रूप है।

परीक्षण का पहला चरण

नई थेरेपी की मदद से कैंसर के तीन मरीजों को जीवनदान मिला। इसने प्रतिरक्षी कोशिकाओं को ट्यूमर किलर में बदल दिया। पहले चरण के ट्रायल में भाग लेने वाले दो मरीजों की हालत पिछले एक साल से सुधर रही है। तीसरे मरीज के शरीर ने अच्छी प्रतिक्रिया दी है और उसका कैंसर नियंत्रण में है। अगला बड़ा चरण शुरू करने से पहले शोधकर्ता क्रोनिक लिम्फोसाइटिक ल्यूकिमिया के शिकार चार और मरीजों का उपचार करना चाहते हैं।

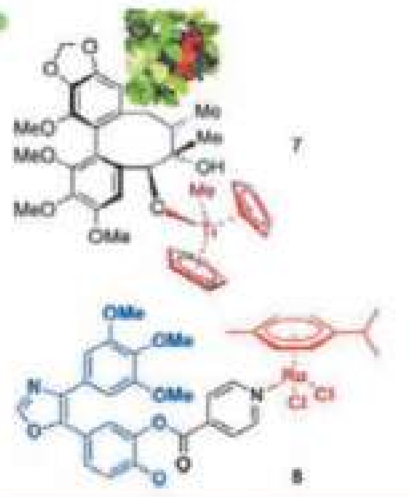

विकास के दौर में

ट्रायल के नतीजों ने वैज्ञानिकों को हैरत में डाला, हालांकि जीन थेरेपी अभी भी विकास के दौर में है। पेनसिल्वेनिया विश्वविद्यालय के पेरेलमन मेडिसीन स्कूल के डॉ. माइकल कैलोस के अनुसार हमने टी-सेल की सतह पर एक कुंजी डाली, जो उस ताले के साथ फिट बैठती है, जो सिर्फ कैंसर की सेलों में होता है। इलाज के नतीजे दूसरे प्रकार के कैंसरों के इलाज का भी रास्ता सुझाते हैं। इसमें फेफड़े और अग्नाशय का कैंसर भी शामिल है। शोध के नतीजे न्यू इंग्लैंड जर्नल ऑफ मेडिसीन और साइंस ट्रांसलेशनल मेडिसीन पत्रिकाओं में प्रकाशित किए गए हैं। कैलोस ने कहा है कि एडॉप्टिव टी-सेल ट्रांसफर के नाम से जाने, जाने वाले पिछले प्रयास या तो इसलिए विफल हो गए कि टी-सेलों की प्रतिक्रिया बहुत कमजोर थी या फिर इसलिए कि वे सामान्य ऊतकों के लिए अत्यंत विषैले थे।

कैंसर इलाज की नई तकनीक

यह तकनीक कैंसर के इलाज की दूसरी तकनीकों से अलग है। यह ट्यूमर का मुकाबला करने के लिए शरीर की अपनी प्रतिरक्षा प्रणाली को काम में लाती है। अब आप इम्यून रेस्पांस करवाने की कोशिश छोड़िए, हम आपको इम्यून रेस्पांस दे रहे हैं।

इलाज की नई प्रणाली सुरक्षित मालूम होती है, लेकिन शोधकर्ताओं का कहना है कि अभी और परीक्षण किए जाने की जरूरत है। पहले चरण के ट्रायल में ल्यूकिमिया के मरीजों को प्रतिरक्षा बढ़ाने वाली दवा दी गई, क्योंकि लक्षित अणु सीडी 19 सामान्य प्रतिरक्षा सेलों पर भी होता है। जीन थेरेपी के लिए शोधकर्ताओं ने एक वायरस का इस्तेमाल किया, जो कोशिकाओं को सिर्फ एक बार संक्रमित कर सकता है। लगभग दो सप्ताह बाद मरीजों ने ट्यूमर लाइसिसि सिंड्रोम का अनुभव करना शुरू किया। इसमें कंपकंपी, मितली और बुखार के लक्षण दिखाई देते हैं, जो कैंसर की मरती कोशिकाओं से पैदा होने वाले उत्पादों के कारण पैदा होते हैं।

नए टी-सेल

नए विकसित टी-सेल बाद के कई महीने तक मरीजों के खून में पाए गए। उनका एक हिस्सा मेमोरी सेलों में बदल गया, जो कैंसर के फिर से होने से सुरक्षा कर सकता है। पोर्टलैंड ओरेगन के कैंसर सेंटर के डॉ. वाल्टर ऊरबा चेतावनी देते हैं कि सक्रिय टी-सेलों और मेमोरी सेलों की उपस्थिति दूसरे प्रकार के कैंसरों के लिए समस्या पैदा कर सकती है, जहां सामान्य कोशिकाओं पर विषैला असर और गंभीर हो सकता है। जीन थेरेपी के ट्रायल पर सारा खर्च शैक्षणिक समुदाय से आया है।

फेफड़ों के कैंसर को रोकेगी जालकोरी

फेफड़ों के कैंसर की नई दवा जालकोरी उपयोगी साबित होगी। अमेरिका के औषधि प्रशासन विभाग ने गोली को मंजूरी दे दी है।

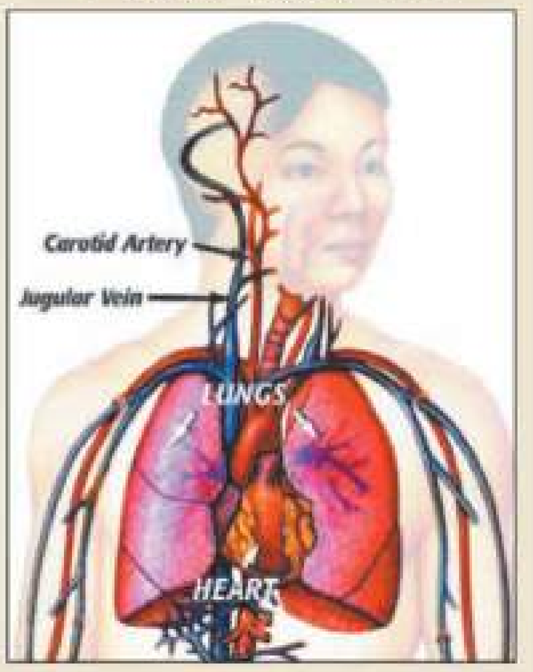

अमेरिका के खाद्य एवं औषध प्रशासन ने फेफड़ों के कैंसर से बचाव करने और ट्यूमर के विकास को रोकने वाली दवा को मंजूरी दी है। जालकोरी नामक यह गोली जीन पर हमला कर उपचार करती है। प्रमुख दवा कंपनी फाइजर द्वारा निर्मित जालकोरी नामक यह गोली कैंसर पीड़ितों के शरीर में जीन पर हमला कर उपचार करती है। इससे उन कैंसर मरीजों का इलाज संभव होगा, जिनके शरीर में एक असाधारण जीन मौजूद होती है, जिससे कैंसर कोशिकाएं बढ़ने लगती है और ट्यूमर विकसित होता रहता है। येल विश्वविद्यालय में कैंसर चिकित्सा विभाग के प्रमुख डॉ. रॉय हर्बस्ट का कहना है यह एक आणविक चिकित्सा का उदाहरण है। अब ऐसी थेरेपी विकसित हो चुकी है, जो कीमोथेरेपी से भी बेहतर है और ट्यूमर को खत्म करने में सहायक सिद्ध हो सकती है। खाद्य एवं औषध प्रशासन (एफडीए) का कहना है कि करीब तीन चौथाई रोगियों की जांच ट्यूमर विकसित होने के बाद हो पाती है। साथ ही इनमें से मात्र छह प्रतिशत लोग पांच साल तक जीवित रह पाते हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि जालकोरी फाइजर के लिए एक ब्लॉकबस्टर उत्पाद सिद्ध हो सकता है। पिछले हफ्ते खाद्य एवं औषध प्रशासन ने एक और ऐसी दवा को मंजूरी दी है, जो जीन में परिवर्तन कर कैंसर का इलाज करती है।

बड़ी फिगर से खो सकती है याददाश्त

अगर आपके फिगर की मोटाई अधिक है तो आप सावधान हो जाइये। इससे आपकी याददाश्त भी जा सकती है।

एक नए शोध के अनुसार किसी महिला की फिगर उसकी याददाश्त को प्रभावित कर सकती है। अमेरिका में शोधकर्ताओं ने पाया कि बूढ़ी महिलाओं का वजन अधिक हो तो उनकी याददाश्त कमजोर होती है, लेकिन अगर नितंबों का वजन अधिक है तो यह याददाश्त को बहुत अधिक प्रभावित करती है।

अन्य बीमारियों का खतरा

विशेषज्ञों का मानना है कि कमर के आसपास वजन बढ़ने से कैंसर, डायबिटीज और दिल की बीमारियों के बढ़ने का खतरा रहता है। यह शोध जर्नल ऑफ द अमेरिकन गेरियाट्रिक्स सोसायटी में छपा है, जिसमें अच्छे दिमाग के लिए सही वजन होने की महत्ता बताई गई है।

वजन घटने से खतरा कम

हालांकि शोध में यह भी कहा गया है कि अगर नितंबों का वजन बहुत अधिक न हो यानी थोड़ा सा ही अधिक हो तो इससे दिमाग की सुरक्षा भी होती है। शोधकर्ता मानते है कि महिलाओं में पेट के आसपास जमा होने वाली वसा ओस्ट्रोजन हार्मोन बनाती है, जिसका बनना मीनोपॉज के बाद कम हो जाता है। ओस्ट्रोजन हार्मोन दिमाग के लिए मददगार होती है। यह शोध 65 से 79 साल की 8,745 महिलाओं पर किया गया। इन महिलाओं की याददाश्त की परीक्षा ली गई। इनमें से अधिकतर महिलाओं का वजन अधिक था और उनके बॉडी मास इंडेक्स का भी माप लिया गया। शोधकर्ताओं ने पाया कि जैसे जैसे बॉडी मास इंडेक्स बढ़ता है, वैसे वैसे उनकी याददाश्त कम होती जाती है। इस शोध में उन महिलाओं की याददाश्त सबसे खराब पाई गई, जिनकी कमर छोटी और नितंब बड़े पाए गए। शोधकर्ताओं के प्रमुख डॉ. डायना कर्विन का कहना था, हमें ये देखना होगा कि कौन सी वसा दिमाग को किस तरह प्रभावित करती है।

नए सेल्स नहीं बनने देती रेडियेशन थेरेपी

रेडियेशन थेरेपी कैंसर की चिकित्सा का एक तरीका है जिसमें आयोनाइजिंग रेडियेशन नामक कणों का इस्तेमाल कैंसर के सेल्स को क्षति पहुंचाने के लिए होता है।

आयोनाइजिंग रेडियेशन कैंसर के सेल्स पर प्रहार करती है और उसके आनुवांशिक तत्व को नुकसान पहुंचा कर नए सेल्स को बनने नही देती। रेडियेशन थेरेपी के दौरान कैंसर के सेल्स के आसपास के सामान्य सेल्स को भी क्षति पहुंचती है लेकिन यह समय के साथ ठीक हो जाते हैं। रेडियेशन थेरेपी बाह्य रूप से एक्स रे बीम्स के रूप में गामा रेज या सब एटामिक पार्टिकल्स के रूप में दी जाती है। बाह्य रूप से रेडियेशन देने की प्रक्रिया में 5 से 15 मिनट लगते है और इसमें दर्द नही होता।

कुछ नए तरीके

चिकित्सा कितनी बार दी जानी है यह हर व्यक्ति के लिए अलग अलग होता है। कुछ स्थितियों में चिकित्सा में कई हफ्ते लग जाते है। आंतरिक रूप से भी रेडियेशन दिया जाता है। ऐसे में रेडियोऐक्टिव पदार्थों को शरीर की कैविटी के रख दिया जाता है या फिर ट्यूमर के सेल्स के अन्दर रखा जाता है। रेडियेशन थेरेपी के प्रभाव को बढ़ाने के लिए अपनाये जाने वाले कुछ नए तरीके हैं –

- **कनफार्मल बीम तकनीक:** कई बीम से एक ही समय रेडियेशन भी ली जा सकती है। ऐसा करने से रेडियेशन ट्यूमर के सेल्स पर एकत्रित हो जाता है और सामान्य टिश्यूज को कम प्रभावित करता है।
- **इन्ट्राआपरेटिव रेडियेशन थेरेपी :** सर्जरी के दौरान ट्यूमर पर रेडियेशन दी जाती है।
- **रेडियेसेंसिटाइजर्स:** यह ड्रग्स कैंसर के सेल्स पर रेडियेशन के प्रभाव को बढ़ाते हैं।
- **रेडियोप्रोटेक्टर्स:** यह ड्रग्स सामान्य सेल्स को रेडियेशन के द्वारा हुई क्षति से बचाते हैं जबकि आसपास के कैंसर के सेल्स क्षतिग्रस्त हो चुके होते हैं।
- **रेडियोइम्यूनोथेरेपी:** रेडियोएक्टिव पदार्थ एण्टीबाडीज से जुड़े होते हैं जो कि रक्षात्मक रसायन होते हैं और प्रतिरक्षा प्रणाली द्वारा बनाये जाते हैं। यह एण्टीबाडीज कैंसर के सेल्स को प्रभावित करते हैं। हमारे शरीर के एण्टीबाडीज नान कैंसरस, स्वस्थ सेल्स को प्रभावित नहीं करते हैं इसलिए इससे ट्यूमर के बाहर रेडियेशन से होने वाली क्षति का खतरा कम होता है।

रोग की चिकित्सा

बाह्य / एक्सटर्नल रेडियेशन थेरेपी शुरू करने से पहले रेडियेशन विशेषज्ञ चिकित्सा की योजना बनाता है। वह यह भी निर्धारित करता है कि मरीज को किस प्रकार की रेडियेशन और कितने सेशन देने हैं। आप शुरूआती सेशन में भाग ले सकते हैं। चिकित्सक सबसे पहले उस जगह पर निशान बनाता है जहां पर कि रेडियेशन चिकित्सा देनी होती है। चिकित्सकीय क्षेत्र पर निशान अंकित करने के लिए आजकल छोटे गोल्ड सीड्स का इस्तेमाल किया जाता है जिन्हें कि फिड्यूकल्स कहते हैं। एक चिकित्सकीय सेशन से दूसरे चिकित्सकीय सेशन में जाने के लिए ट्यूमर पर रेडियेशन की बीम देने पर ज्यादा सावधानी की आवश्यकता होती है। इससे रेडिसेशन के फैलने का खतरा और सामान्य सेल्स को क्षति पहुंचने का खतरा कम हो जाता है। चिकित्सा के दौरान मरीज को अस्पताल का गाउन पहनने की आवश्यकता होती है। रेडियेशन थेरेपी के कमरे में आपको या तो चिकित्सा की टेबल पर लेटना होता है या विशेष कुर्सी पर बैठना होता है। आपकी त्वचा पर बनाये निशान से चिकित्सक उस जगह को निर्धारित कर सकेगा जहां पर रेडियेशन देनी है और शरीर के दूसरे भागों पर किसी प्रकार का प्रभाव नही पड़ेगा। थेरेपी लेने के दौरान आपका एक ही स्थिति में पड़े रहना जरूरी है। इसी कारण से आपके शरीर को एक सांचे में रखा जाता है। एक बार जबकि आप चिकित्सा के लिए तैयार हो जाते है तो रेडियेशन आनकोलाजिस्ट कमरे से बाहर निकलकर पास के कंट्रोल रूम में चला जाता है। यहां से चिकित्सक ट्रीटमेंट मशीन का प्रयोग कर एक खास खिड़की से आपकी निगरानी करता है। रेडियेशन थेरेपी के दौरान आप चिकित्सकीय मशीन की आवाज सुन सकते हैं और यह मशीन आपके इर्द गिर्द घूमती है। यह चिकित्सा 1 से 5 मिनट तक होती है और इसमें किसी प्रकार का दर्द भी नही होता। ट्रीटमेंट के कमरे में आपको 5 से 15 मिनट तक का समय लगता है। सामान्यतः यह चिकित्सा एक हफ्ते से कई हफ्तों तक की जाती है। अगर आप आंतरिक रेडियेशन थेरेपी करा रहे हैं तो आपकी चिकित्सा थोड़ा अलग तरीके से होती है।

ब्रैकी थेरेपी

एक तरीका है ब्रैकीथेरेपी जिसे कि इन्टरस्टीशियल रेडियेशन थेरेपी भी कहते हैं। अगर आप यह प्रक्रिया करा रहे हैं तो आपको एनेस्थीसिया दिया जाता है तारों में मौजूद रेडियोएक्टिव पदार्थ या छोटे ट्यूब में पड़ा रेडियोएक्टिव पदार्थ मरीज के शरीर में ट्यूमर के स्थान पर सीधा आरोपित कर दिया जाता है। यह रेडियोएक्टिव आरोपण शरीर के अंदर रहता है या इसे कुछ समय बाद शरीर से निकाल दिया जाता है और यह बात भी कैंसर के प्रकार पर निर्भर करती है।

दूसरी प्रक्रिया जिसे कि इन्ट्राकैविटरी थेरेपी कहते हैं इसमें आपको जनरल या लोकल एनेस्थेटिक दिया जाता है और रेडियोएक्टिव पदार्थ को सीधा शरीर की कैविटी में आरोपित कर दिया जाता है। बाद में इसे निकाल भी दिया जाता है। पुराने समय से आज तक दोनों ही प्रकार की रेडियेशन थेरेपी में बदलाव आये हैं। जैसे कि रेडियेशन का स्रोत प्रोटोन भी हो सकते हैं। इस तकनीक में रेडियेशन बीम को सीधा मरीज पर केंद्रित किया जाता है। इससे अधिक मात्रा में रेडियेशन टिश्यूज तक पहुंच जाती है और यह सामान्य सेल्स को कम नुकसान पहुंचाती है।

वितरण की नयी तकनीक को देखते हुए एक्स रे इमेजिंग तकनीक का प्रयोग भी विस्तार से हो रहा है। ऐसे दो तरीके हैं–

- **थ्री डाइमेंशनल कनफार्मल रेडियेशन और इन्टेंसिटी माड्यूलेटेड रेडियेशन :** इसका ध्येय है ट्यूमर सेल्स में रेडियेशन की सही मात्रा देना जिससे कि सामान्य सेल्स को किसी प्रकार की क्षति ना पहुंचे।
- **साइबरनाइफ थेरेपी** अधिक मात्रा में रेडियेशन थेरेपी देती है और इसे छोटे अंतराल पर देना होता है। ऐसे में बहुत ही सटीक मात्रा में रेडियेशन की डोज देनी होती है। कुछ स्थितियों में रेडियेशन चिकित्सा में कुछ हफ्ते लग जाते हैं और बीमारी ठीक हो जाती है।

बीमारी का पूर्वानुमान

चिकित्सक कुछ शारीरिक जांच, स्कैन, एक्स रे, रक्त जांच करके रेडियेशन थेरेपी का पता लगाने की कोशिश करेंगे। आपके निश्चित प्रकार की फोर्ले आ और जांच से यह पता चलेगा कि रेडियेशन थेरेपी की आवश्यकता है या नहीं। इस जांच से ट्यूमर की स्थिति का पता चलेगा और यह भी पता चलेगा कि कैंसर कितना फैल चुका है। रेडियेशन थेरेपी के बहुत से दूसरे अतिरिक्त प्रभाव है जो कि शरीर के उस क्षेत्र पर निर्भर करते हैं जिनकी चिकित्सा की जाती है। रेडियेशन थेरेपी के प्रभाव कुछ इस प्रकार से हो सकते है जैसे कि थकान होना, बालों का झड़ना, त्वचा के रंग में परिवर्तन, भूख ना लगना, डायरिया आना, इन्फर्टिलिटी, स्टेरिलिटी, वैजाइनल ड्राइनेस। रेडियेशन थेरेपी से दूसरे प्रकार के कैंसर का भी डर रहता है।

Fatva samachar 05 April 2024_17 feb page-1.qxd 4/3/2024 11:25 PM Page 7

निर्देशक बने कलाकारों में अब तक माधवन रहे नंबर वन

पिछले कुछ वर्षों में अभिनेता से निर्देशक बने कलाकारों पर नजर डाले तो निर्देशक के रूप में आर माधवन को ही सबसे अधिक सफलता मिली है। बीते शुक्रवार को को सिनेमाघरों में दो फिल्में स्वातंत्र्य वीर सावरकर और मडगांव एक्सप्रेस रिलीज हुई है। स्वातंत्र्य वीर सावरकर से अभिनेता रणदीप हुड्डा निर्देशन करियर की शुरुआत कर रहे हैं और मडगांव एक्सप्रेस में अभिनेता कुणाल खेमू निर्देशक बने है।

रणदीप हुड्डा

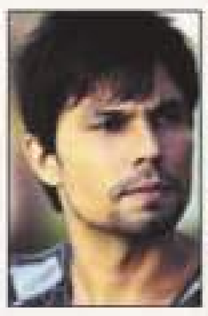

अभिनेता रणदीप हुड्डा ने अपने निर्देशन करियर की शुरुआत स्वतंत्रता सेनानी वीर सावरकर की बायोपिक स्वातंत्र्यवीर सावरकर से की। अपनी पहली ही फिल्म से रणदीप हुड्डा ने यह साबित कर दिया कि वह एक काबिल निर्देशक हैं। इस फिल्म में उनके अभिनय की जमकर तारीफ हो ही रही है, साथ ही उनके निर्देशन कौशल की भी खूब तारीफ हुई है। इस फिल्म का निर्माण और लेखन भी रणदीप हुड्डा ने किया है। यह फिल्म सिनेमाघरों में रिलीज हो चुकी है। फिल्म की ओपनिंग मराठी में बहुत अच्छी बताई जा रही है, हिंदी में फिल्म को उतना अच्छा प्रतिसाद नहीं मिला है।

कुणाल खेमू

अभिनेता से निर्देशक बने कुणाल खेमू की भी फिल्म मडगांव एक्सप्रेस रणदीप हुड्डा की फिल्म स्वातंत्र्य वीर सावरकर के साथ सिनेमाघरों में 22 मार्च को रिलीज हुई है। कुणाल खेमू के निर्देशन के हिसाब से देखें तो यह औसत दर्जे की फिल्म है। इस फिल्म में कुणाल खेमू भी एक दृश्य में नजर आते ह। इस फिल्म से जिस तरह की उम्मीद कुणाल खेमू के प्रशंसक कर रहे थे, बॉक्स ऑफिस पर फिल्म को वैसी सफलता मिलती नही दिख रही है। फिल्म का निर्माण रितेश सिधवानी और फरहान अख्तर ने किया है।

अजय देवगन

अभिनेता अजय देवगन अब तक चार फिल्मों का निर्देशन कर चुके है। लेकिन जितने काबिल वह अभिनेता है उतने काबिल निर्देशक नही बन पाए। अजय देवगन ने अपने निर्देशन करियर की शुरुआत साल 2009 में रिलीज फिल्म यू मी और हम से की, इसके बाद उन्होंने शिवाय, रनवे 34 और पिछले साल रिलीज फिल्म भोला का निर्देशन किया। उनके निर्देशन में बनी अब तक चारों फिल्में दर्शकों की अपेक्षाओं पर खरी नही उतरी।

रितेश देशमुख

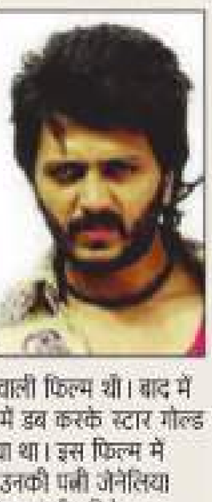

अभिनेता रितेश देशमुख ने मराठी फिल्म वेद से निर्देशन के क्षेत्र में कदम रखा। मराठी भाषा की यह सबसे सफल फिल्म रही है। साल 2022 में रिलीज यह मराठी सिनेमा की चौथी सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्म थी। बाद में इस फिल्म को हिंदी में डब करके स्टार गोल्ड पर रिलीज किया गया था। इस फिल्म में रितेश देशमुख और उनकी पत्नी जेनेलिया डिसूजा की लीड भूमिकाएं थी। रितेश इन दिनों छत्रपति शिवाजी की कहानी पर आधारित फिल्म का निर्देशन कर रहे है।

रोहित शेट्टी से अनुरोध किया था की मुझे सिर्फ बैकग्राउंड डांसर ना बनाए

प्रियामणि ने हाल ही में खुलासा किया कि जब उन्हें पहली बार रोहित शेट्टी के ऑफिस से शाहरुख खान और दीपिका पादुकोण स्टारर फिल्म चेन्नई एक्सप्रेस के लिए फोन आया, तो उन्हें ये मजाक लगा था। प्रियामणि को यकीन ही नहीं हुआ कि ऐसा हो सकता है। प्रियामणि ने बातचीत के दौरान कहा- एक दिन मुझे रोहित शेट्टी के ऑफिस से फोन आया। मुझे लगा रोहित शेट्टी की टीम का कोई व्यक्ति मुझसे क्यों संपर्क करेगा। फिर उन्होंने मुझसे मुंबई आने के लिए कहा। इस बात के लिए मैं तुरंत मान गई और हामी भरकर फोन रख दिया। सच कहूं तो मुझे लगा कोई मुझसे शरारत कर रहा है। फिर मैंने ये पता करने के लिए कि कॉल क्या सच है या मजाक अपने मैनेजर से पूछा। 5 मिनट बाद मेरे मैनेजर ने जानकारी दी कि वो कॉल असली थी। बस फिर क्या था, अगला काम जो मैंने किया वो था- बैग पैक करके सीधा मुंबई आना। मेरे मैनेजर भी मेरे साथ मुंबई आए। आखिरकार हमारी मुलाकात रोहित शेट्टी से हुई। रोहित शेट्टी ने मुझे बताया कि उन्होंने एक कन्नड़ गाना देखा है, जिसमें मैं और पुनीत राजकुमार हैं। प्रियामणि ने आगे कहा- मैंने चेन्नई एक्सप्रेस का एड अखबार में देखा था। मुझे पता था कि इस फिल्म में शाहरुख खान और दीपिका पादुकोण है। इसलिए मैं सोचने लगी कि रोहित सर मुझे ऐसी फिल्म में क्यों लेंगे। हालांकि मैं बहुत खुश और आभारी महसूस कर रही थी। मैंने रोहित सर से अनुरोध किया वे मुझे गाने में सिर्फ बैकग्राउंड डांसर ना बनाए। मैं अपने दिमाग में इसलिए ऐसा सोच रही थी, क्योंकि फिल्म में इंडस्ट्री के 2 सबसे बड़े नाम शामिल थे। ये बात सुनकर उन्होंने तुरंत कहा कि गाने में सिर्फ मैं और शाहरुख खान होंगे। दीपिका पादुकोण गाने में नहीं होंगी। जैसे ही मैंने ये सुना, तुरंत हां कर दी।

प्रियामणि ने शाहरुख खान की तारीफ की

प्रियामणि ने बताया कि उन्होंने पांच रातों की अवधि में 1 2 3 4 गेट ऑन द डांस फ्लोर गाना शूट किया। शाहरुख खान की प्रशंसा करते हुए वे बोलीं- शाहरुख बहुत मेहनती हैं। वे जिस मुकाम पर आज हैं, उसके लिए उन्हें ये सब करने की जरूरत नहीं है। दरअसल हम शाम 6 बजे से सुबह 6 बजे तक शूटिंग किया करते थे। जैसे ही शूटिंग खत्म होती थी, मैं आराम करने के लिए अपने कमरे में वापस चली जाती थी। लेकिन शाहरुख वहीं रुकते थे और असिस्टेंट्स के साथ और प्रैक्टिस किया करते थे। उनके समर्पण और सिनेमा के प्रति प्यार को मैं दिल से सलाम करती हूं।

प्रियामणि जल्द ही मैदान में दिखेंगी

प्रियामणि जल्द ही अजय देवगन स्टारर फिल्म मैदान में नजर आएंगी। फिल्म में अजय देवगन फुटबॉल कोच सैय्यद अब्दुल रहमान के किरदार में दिखेंगे, जो कि माना जाता है भारतीय फुटबॉल के संस्थापक है। सैय्यद अब्दुल रहमान ने 1950 से 1963 तक भारतीय फुटबॉल टीम के कोच और प्रबंधक के रूप में काम किया था। ये फिल्म बोनी कपूर और जी स्टूडियोज के बैनर तले रिलीज होगी।

सलमान ने दबंग 4 पर दी अपडेट

सलमान खान ने हाल ही में फिल्म दबंग 4 पर अपडेट दी है। उन्होंने कहा है कि जब उनकी और अरबाज खान की सहमति एक कहानी पर हो जाएगी, तब फिल्म की शूटिंग कर दी जाएगी। अभी तक की कहानियों पर दोनों की सोच मेल नही खा रही है। दबंग सीरीज की पहली फिल्म 2010 में रिलीज हुई थी। इसके 2 साल बाद, 2012 में फिल्म का दूसरा पार्ट दबंग 2 रिलीज हुआ था। 7 साल के लंबे अंतराल के बाद सीरीज का तीसरा पार्ट दबंग 3 रिलीज किया गया था। इन तीनों ही पार्ट में सलमान खान, सोनाक्षी सिन्हा और अरबाज खान को देखा गया था। फिल्म में सोनाक्षी ने सलमान की पत्नी का किरदार निभाया था। वहीं, अरबाज उनके भाई के रोल में दिखे थे। रवीना टंडन की फिल्म पटना शुक्ला की स्क्रीनिंग के दौरान सलमान खान से दबंग 4 के बारे में सवाल किया गया। इस पर सलमान ने कहा- जब हम दोनों भाई (सलमान और अरबाज) एक ही स्क्रिप्ट को लॉक कर देंगे, फिल्म आ जाएगी। अभी अरबाज को कुछ और बनाना है, मुझे कुछ और। सलमान को आखिरी बार फिल्म टाइगर 3 में देखा गया था। फिल्म में उनके साथ कटरीना कैफ और इमरान हाशमी भी नजर आए थे। आने वाले समय में सलमान 25 साल बाद करण जौहर के साथ काम करने वाले है। फिल्म का टाइटल द बुल है, जिसके निर्देशन का जिम्मा 'शेरशाह' फेम डायरेक्टर विष्णुवर्धन पर होगा। वहीं, करण इसे प्रोड्यूस करेंगे। इसके अलावा सलमान के पास 'टाइगर वर्सेज पठान' और सूरज बड़जात्या की फिल्म 'प्रेम की शादी' भी है।

कृति सेनन ने राजनीति के सवाल पर तोड़ी चुप्पी

हाल ही में कंगना रनोट को मंडी सीट से बीजेपी का टिकट मिला है। गोविंदा भी शिवसेना शिंदे गुट में शामिल हुए है। ऐसे में कृति ने भी एक इंटरव्यू के दौरान राजनीति में आने के बारे में अपने थॉट शेयर किए।

राजनीति के सवाल पर तोड़ी चुप्पी

जब कृति से सवाल पूछा गया कि क्या वे कभी राजनीति में आना चाहेंगी? इस पर कृति ने कहा- मैंने कभी इसके बारे में सोचा नहीं है। सच कहूं तो मैं इस तरह से नहीं सोचती कि मुझे ये करना है या वो करना है। मैं कोई भी काम तभी करती हूं, जब मेरे अंदर से उसके लिए आवाज निकले। या अगर मेरे अंदर किसी चीज को लेकर बहुत पैशन हो। अगर कभी मेरे दिल में आएगा कि मुझे राजनीति में आना है, तब मैं शायद आ सकती हूं। जाहिर सी बात है कृति ने साफ कर दिया कि फिलहाल उनका राजनीति में आने का कोई प्लान नहीं है, लेकिन फ्यूचर में मन करेगा तो जरूर आएंगी।

10 मई को थिएटर में दस्तक देगी राजकुमार राव की फिल्म श्रीकांत

श्रीकांत उद्योगपति श्रीकांत बोला की जीवनी पर आधारित है। बोला एक ऐसे उद्योगपति हैं, जिन्होंने अपनी दृष्टिहीनता को समस्या नहीं बल्कि चुनौती समझा और कामयाबी की नई इबारत लिखी। फिल्म में राजकुमार राव के अलावा ज्योतिका और अलाया एक मुख्य भूमिका में नजर आएंगी। अभिनेता राजकुमार राव के फैंस के लिए अच्छी खबर सामने आई है। राजकुमार राव की अपकमिंग फिल्म श्रीकांत, जिसका नाम पहले श्री रखा गया था। उसका इंतजार अब खत्म होने वाला है। मेकर्स ने शनिवार को इस फिल्म की रिलीज डेट की घोषणा कर दी है। यह फिल्म उद्योगपति श्रीकांत बोला की जीवनी पर आधारित है, जिसमें राजकुमार राव मुख्य किरदार में नजर आएंगे। फिल्म की घोषणा होने के बाद से ही दर्शकों में इसे लेकर खासा उत्साह देखने को मिल रहा है। चलिए आपको बताते हैं कि यह फिल्म कब रिलीज होगी। दरअसल, टी-सीरीज और चॉक एन चीज फिल्म्स प्रोडक्शन एलएलपी के बैनर तले बनी इस फिल्म की घोषणा के बाद से दर्शक से इसका इंतजार कर रहे थे। शनिवार को टी-सीरीज ने एक्स पर एक पोस्ट शेयर कर फिल्म की रिलीज डेट की घोषणा की। फिल्म अक्षय तृतीया के मौके पर 10 मई को थिएटर में रिलीज होगी। फिल्म के पोस्टर में एक टैगलाइन भी लिखा गया है, आ रहा है सबकी आंखें खोलने।

तुषार हीरानंदानी ने किया है निर्देशन

दरअसल, श्रीकांत बोला एक ऐसे उद्योगपति है, जिन्होंने अपनी दृष्टिहीनता को समस्या नही बल्कि चुनौती समझा और कामयाबी की नई इबारत लिखी। फिल्म मे राजकुमार राव के अलावा ज्योतिका और अलाया एक मुख्य भूमिका में नजर आएंगी। श्रीकांत का निर्देशन तुषार हीरानंदानी ने किया है। फिल्म की कहानी सुमित पुरोहित और जगदीप सिंधु ने लिखी है। गौरतलब है कि उद्योगपति श्रीकांत बोला बौलेंट इंडस्ट्रीज के संस्थापक हैं, जो आंध्र प्रदेश के एक छोटे से गांव से आते है।

फिर से निभाएंगे बैड बॉय वाले किरदार

इमरान हाशमी इंडस्ट्री के चर्चित अभिनेताओं में एक हैं। हाल के दिनों इमरान कई बड़ी और हिट फिल्मों में नजर आए। इमरान की हालिया रिलीज वेब सीरीज शो टाइम भी खूब चर्चा में है, जहां इमरान अपने किरदार से खूब सुर्खियां बटोर रहे हैं। इंडस्ट्री में इस ऊंचाई पर पहुंचने के लिए इमरान ने लंबा संघर्ष किया, जिसमें साल 2008 में आई फिल्म जन्नत इमरान के करियर की टर्निंग प्वाइंट साबित हुई थी। बीते 11 साल से दर्शक इस फिल्म के तीसरे पार्ट का इंतजार कर रहे है, जिसे लेकर इमरान हाशमी ने बड़ा खुलासा किया है। हाल ही में एक साक्षात्कार मे इमरान ने जन्नत 3 के बारे में बात की। इमरान ने कहा, मेरे लिए यह सबसे बेहतर चीज होगी। हां अगर किस्मत में इसका बनना लिखा होगा तो मेरे लिए यह एक चमत्कार जैसा होगा। इमरान ने आगे कहा, आने वाले दिनों मेरी कई नई फिल्मों में नजर आने वाला हूं, जिसमें दर्शक मुझे मेरी पुरानी बैड बॉय वाले किरदार में देख सकेंगे। मैं एक बार फिर से उस तरह की किरदारों को निभाऊंगा।

क्रूज पर शूट होगी अक्षय कुमार की 350 करोड़ी फिल्म हाउसफुल 5

अक्षय कुमार अभिनीत लोकप्रिय कॉमेडी फ्रेंचाइजी हाउसफुल 5 अपने एलान के बाद से ही सुर्खियों में है। हालांकि, अब तक इसकी शूटिंग या कलाकारों के नाम पर कोई अपडेट सामने नहीं आया है। फिल्म पहले दिवाली 2024 पर रिलीज होने वाली थी। वहीं अब इसे 6 जून, 2025 को सिनेमाघरों में रिलीज किया जाएगा। इसी बीच फिल्म की शूटिंग को लेकर एक बड़ी जानकारी सामने आई है, जिसन फैंस के उत्साह को काफी ज्यादा बढ़ा दिया है। साजिद नाडियाडवाला द्वारा निर्मित और तरूण मनसुखानी द्वारा निर्देशित फिल्म हाउसफुल 5 का बजट 350 करोड़ रुपये बताया जा रहा है। इस तरह यह भारत की सबसे बड़ी कॉमेडी फिल्म साबित होगी। हाउसफुल 5 के घोषणा वीडियो में सफल फ्रेंचाइजी की पहली चार फिल्मों के मजेदार और यादगार क्लिप दिखाए गए। दिलचस्प बात यह है कि इस्तेमाल किए गए ट्रांजिशन में एक क्रूज जहाज दिखाया गया है। इससे साफ होता है कि हाउसफुल 5 का क्रूज, दर्शकों को पागलपंती भरी सवारी पर ले जाने के लिए पूरी तरह तैयार है। एक मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, हाउसफुल फ्रेंचाइजी में आम बात यह है कि पागल पात्रों का एक समूह एक घर में इकट्ठा होता है, जिससे पागलपन पैदा होता है। इसीलिए इसका नाम हाउसफुल रखा गया, क्योंकि यह हाउस इन मजेदार किरदारों से भरा हुआ है। हाउसफुल 5 पिछले चार भागों की तुलना में पांच गुना अधिक मनोरंजक होने का वादा करता है। उम्मीद है कि नई फिल्म हर पैमाने पर बेहतर और बड़ी होगी, जो बिल्कुल मनमोहक कहानी और शानदार सिनेमाई दृश्यों के साथ दर्शकों को लुभाएगी। दोस्ताना फेम तरुण मनसुखानी ने इस बार निर्देशन की जिम्मेदारी संभाली है और इसकी शूटिंग इस साल के मध्य में यूके में शुरू होने वाली है।

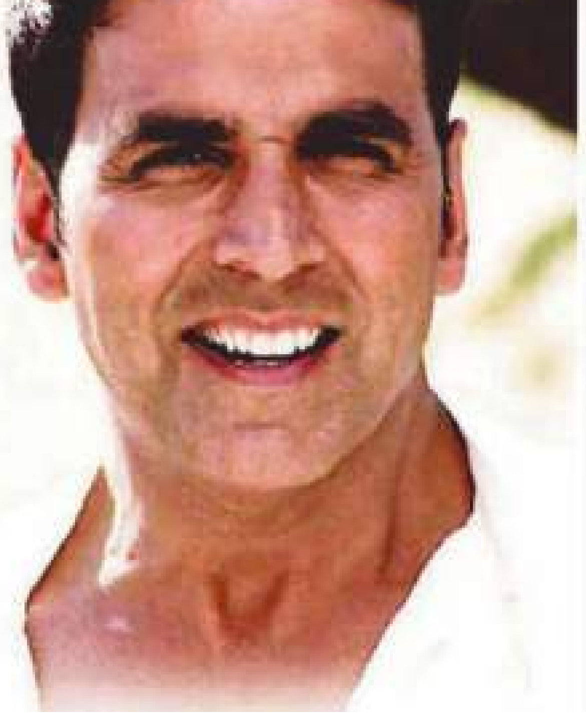

Fatva samachar 05 April 2024_17 feb page-1.qxd 4/3/2024 11:25 PM Page 8

लोकसभा निर्वाचन की तैयारी एवं स्वीप गतिविधियों के संबंध में कलेक्टर सभाकक्ष में आयोजित हुई प्रेसवार्ता

दुर्गेश बर्मन डिंडौरी।

कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी विकास मिश्रा ने लोकसभा निर्वाचन की तैयारी, स्वीप गतिविधि और एमसीएमसी के संबंध में कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में प्रेसवार्ता का आयोजन किया। कलेक्टर मिश्रा ने निर्वाचन के संबंध जानकारी देते हुए कहा कि जिले में सामान्य प्रेक्षक डॉ. राजूनारायण स्वामी (आईएएस) ने निरीक्षण कर लिया है और मतदान तैयारी के लिए संतुष्टि जाहिर की है । सामान्य प्रेक्षक की उपस्थिति में द्वितीय रेडमाइजेशन किया जा चुका है। उन्होंने बताया कि मतदान केन्द्रों पर मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति की जा चुकी है। जिले में 28 आदर्श मतदान केन्द्र बनाए जा रहे हैं, जो अलग-अलग विषय आधारित हैं। इनमें माहूल पत्ते की प्रयोग कर ग्रीन पोलिंग बूथ विशेष है । 50 ‹द्यद्य ड्डश्वद्दद्दठ्ठ क्वशह्लद्ध मतदान केंद्र भी बनाये गए है। जहाँ सभी मतदानकर्मी महिलाएं होगीं। दिव्यांगजनों के लिए मतदान केंद्रों में रैम्प, व्हीलचेयर जैसी सुविधाएं प्रदान की जा रही है।

कलेक्टर ने अवगत कराया कि इस लोकसभा चुनाव के दौरान मतदानकर्मियों के लिए पृथक व्यवस्थाएँ की है, जिनमें ड्यूटी ऑर्डर में सुधार, बैठक व्यवस्था की बेहतर व्यवस्था, मतदान सामग्री वितरण व जमा के लिए अलग से कांउटर निर्माण किए गए है। महिला मतदानकर्मियों के लिए बेहतर व्यवस्थाएँ की जा रही है।

कलेक्टर ने मीडियाकर्मियों को बताया कि निर्वाचन में सुरक्षा व्यवस्था के लिए जिले में मिजोरम से बल आ रहा है और जिले में पर्याप्त सुरक्षा बल हैं। जिले में संवेदनशील मतदान केंद्र चिन्हित किए गए है।राजस्व और पुलिस की संयुक्त टीम कैंप आयोजित कर असामाजिक तत्वों पर योजनागत कार्यवाही कर रहे है। कलेक्टर विकास मिश्रा ने बताया कि निर्वाचन के दौरान होने वाली किसी भी घटना पर त्वरित कार्यवाही के लिए जिला प्रशासन की टीम तत्पर है। कलेक्ट ने मीडियाकर्मियों को राजस्व वसूली में जिले की उपलब्धि के बारे में अवगत कराया कि जिले ने राजस्व वसूली में 125 त्न वसूली प्राप्त कर राज्य में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। जिले को वर्ष 2023-24 वितीय वर्ष के लिए 2 करोड़ का लक्ष्य दिया गया था, जिसमें जिला राजस्व टीम ने 2.51 करोड़ की वसूली कर पहला स्थान प्राप्त किया। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी विकास ने मीडिया कर्मियों से जिले में लोकसभा चुनाव में मत प्रतिशत बढ़ाने के लिए सहयोग करने की अपील की। प्रेस वार्ता में जिला स्वीप नोडल अधिकारी सुश्री विमलेश सिंह सहित अन्य अधिकारी भी उपस्थित रहे।

अस्पताल परिसर में निमार्णाधीन कार्यों का कलेक्टर ने किया निरीक्षण

दुर्गेश बर्मन डिंडौरी

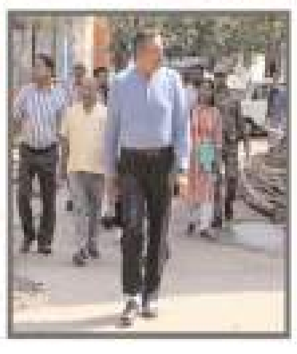

कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी विकास मिश्रा ने जिला चिकित्सालय डिण्डौरी परिसर में 33 के.व्ही. डेडीकेटेड फीडर, ट्रॉसफार्मर एवं एच.टी. लाईन सबस्टेशन स्थापित किये जाने हेतु निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी रमेश मरावी, मुख्य नगर परिषद अधिकारी सतेन्द्र शालवार, जिला आयुष अधिकारी संतोष परस्ते, जिला जनसंपर्क प्रभारी अधिकारी चेतराम अहिरवार, कार्यपालन यंत्री एम.पी.ई.बी. श्री राकेश बघेल, लोक निर्माण विभाग विद्युत एवं यांत्रिकी श्रीमती सरस्वती धुर्वे, उपयंत्री एन.एच.एम.सुश्री सुरूचि पराते, उपस्थित रहे।

जिला चिकित्सालय डिंडौरी में स्वास्थ्य सेवाओं के सुचारू संचालन के लिए अस्पताल परिसर में एच.टी. लाईन सबस्टेशन, पोस्ट मार्टम कक्ष एवं जैव अविशिष्ट केन्द्र स्थापित किये जाने के लिए प्रचलित निर्माण कार्य का जायजा लिया। जैव अविशिष्ट संग्रहण केन्द्र के समीप पानी के टंकी को मरम्मत, अस्पताल परिसर में साफ-सफाई एवं निर्माणाधीन भवन के पड़े कच्चे सामग्री को उचित स्थान प्रबंधित करने के निर्देश दिए।

कलेक्टर विकास मिश्रा ने चिकित्सालय परिसर में स्थित सीटी स्कैन कक्ष का निरीक्षण एवं रोगियों जांच रजिस्टर का अवलोकन किया और रिकार्ड को सुव्यवस्थित रखने के निर्देश दिए।

संक्षिप्त समाचार

पुलिस अधिकारियों को सौंपी शिकायत

निशांत शुक्ला मैहर। मिली जानकारी के अनुसार जिले के सरलानगर में गैंगवार की घटना सामने आ रही है दो गुटों में आए दिन विवाद होता रहता है वही मैहर पुलिस दोनों गुटों के ऊपर मुकदमा कायम कर कर दी गई है वही दोनों पक्ष का जमकर हुए विवाद की जांच पड़ताल कर दोनों पक्ष के ऊपर मामला कायम कर दिया गया है ! लोगों ने न्याय की उम्मीद लगाकर ज्ञापन भी सोपे है।

कोतमा में हुई वाहनों की चेकिंग

अनूपपुर। पुलिस अधीक्षक अनूपपुर के निर्देशानुसार पर यातायात प्रभारी के द्वारा कोतमा में वाहन चेकिंग लगाई ! आदर्श आचार संहिता का पालन सुनिश्चित करवाने हेतु वाहन चालकों को विधिवत नंबर प्लेट लगाने, की सलाह दी और गाड़ी में ब्लैक फिल्म का उपयोग न करने की हिदायत दी गई,साथ ही पदनाम वाली नंबर प्लेट हटवाने की कार्रवाई की गई।

यातायात पुलिस द्वारा 27 वाहन चालकों पर की गई चालानी कार्यवाही

अनूपपुर। यातायात पुलिस द्वारा 27 वाहन चालकों पर की गई चालानी कार्यवाही एवं 2 शराब पीकर वाहन चलाने वाले वाहन चालकों पर कार्यवाही कर वाहन जप्त कर प्रक् रण भेजा गया न्यायालय,माननीय सुप्रीम कोर्ट कमिटी ऑन रोड सेफ्टी द्वारा देश में बढ़ती हुई सड़क दुर्घटनाओं एवं उनमें होने वाली मृत्यु व घायलों की संख्या मे 50 कमी ले जाने के निर्देश एवं पुलिस परिवहन शोध संस्थान पीटीआरआई पुलिस मुख्यालय भोपाल के आदेश के पालन में पुलिस अधीक्षक जिला अनूपपुर श्रीमान जितेंद्र सिंह पवार अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री शिव कुमार सिंह एवं अनुविभागीय अधिकारी अनूपपुर श्री सुमित केरकेट्टा के निर्देशन में यातायात प्रभारी निरीक्षक ज्योति दुबे द्वारा 01/04/2024 को कस्बा अनूपपुर के अमरकंटक तिराहा में सघन वाहन चेकिंग लगाकर वाहनों की चेकिंग की गई , इस दौरान 27वाहन चालकों के विरुद्ध निम्न हेडों पर बिना हेलमेट धारण किये वाहन चलाने पर, बिना 0सीट बेल्ट धारण किए वाहन चलाने पर, नंबर प्लेट विधिवत नहीं होना एवं ब्लैक फिल्म के प्रयोग पर कार्यवाही करते हुए 9500 का समन शुल्क वसूला गया। इस दौरान 2 वाहन चालकों पर शराब पीकर वाहन चलाने पर कार्यवाही करते हुए मौके पर ब्रीथ एनालाइजर के माध्यम से जांच कर वाहन को जप्त कर चालान न्यायालय में पेश किया गया ,उक्त कार्यवाही के दौरान थाना यातायात का अन्य स्टाफ भी उपस्थित रहा।

उप मुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा 5 अप्रैल को धार प्रवास पर रहेंगे

धार । प्रदेश सरकार के उप मुख्यमंत्री एवं वित्त मंत्री जगदीश देवड़ा 5 अप्रैल को धार जिले में प्रवास पर रहेंगे तथा भाजपा के विभिन्न कार्यक्रमों में शामिल होंगे।इस दौरान भाजपा जिला अध्यक्ष मनोज सोमानी,जिला प्रभारी श्याम बंसल,विधायक नीना वर्मा,कालू सिंह ठाकुर,प्रदेश मंत्री जयदीप पटेल,भाजपा प्रत्याशी श्रीमती सावित्री ठाकुर सहित भाजपा वरिष्ठ नेता मौजूद रहेंगे। भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने बताया कि उप मुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा तय कार्यक्रम अनुसार 5 अप्रैल को सुबह इंदौर से प्रस्थान कर जिले के इंडोरमा क्षेत्र धाकड़ होटल में सुबह 11 बजे धार विधानसभा क्षेत्र के तीन मंडलो के अपेक्षित कार्यकताओं की बैठक को संबोधित करेंगे। दोपहर 1 बजे भाजपा जिला कार्यालय में जनजाति के प्रमुख कार्यकर्ताओं की बैठक में शामिल होंगे। तथा शाम 4 बजे प्रबुद्धजन सम्मेलन शगुन गार्डन आश्रम रोड़ धार एवं वही पर शाम 6 बजे होली मिलन समारोह व कार्यकर्ता सम्मेलन में उपस्थित होंगे।

प्रतिवर्ष अनुसार इस वर्ष भी स्थानीय वरिष्ठ नागरिक एवं पेंशनर संघ का होली मिलन समारोह संपन्न

पिपलियामंडी। प्राप्त जानकारी के अनुसार स्टेट बैंक के प्रबंधक सुधीर कुमार श्रीवास्तव के मुख्य आतिथ्य में पेंशनर संघ के अध्यक्ष पंकज शर्मा तरुण की अध्यक्षता में बुधवार को गांधी चौराहे पर स्थित कार्यालय पर संघ का होली मिलन समारोह संपन्न हुआ। इस मौके पर संघ के वरिष्ठ लक्ष्मीनारायण कराड़ा जी से. नि शिक्षक का जन्मदिन भी हर्षोल्लाह से मनाया गया। मुख्य अतिथि स्टेट बैंक प्रबंधक श्री श्रीवास्तव जी संघ के अध्यक्ष श्री शर्मा, उपाध्यक्ष श्री कन्हैयालाल कारपेंटर, पूर्व अध्यक्ष देवीलाल सेठिया पूर्व सचिव हुक्मीचंद कनेरिया , भगवती प्रसाद गेहलोत, गोविंदराम शर्मा के सी टेलर राधेश्याम सैनी बालूराम कराड़ा आदि ने विचार व्यक्त करते हुए श्री कराड़ा का पुष्पहारों से भव्य स्वागत किया एवं उनके जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना करी। इस अवसर पर श्री कराड़ा जी का पेंशनर संघ की ओर से शाल एवम श्री फल से स्वागत अभिनंदन किया गया इस अवसर पर बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन श्री श्यामलाल बोराना ने किया व आभार हरिसिंह यादव ने माना।

सी विजिल ऐप से तत्काल हो रहा है शिकायतों का निराकरण

अनवर खान

जिले में सी विजिल ऐप पर शिकायतें प्राप्त हो रही हैं जिनका निर्धारित समयावधि में निराकरण सुनिश्चित किया जा रहा है। मंडला जिले में सी-विजिल ऐप के माध्यम से आदर्श आचरण संहिता के उल्लंघन से संबंधित 14 शिकायतें प्राप्त हुई थी जिन पर सक्षम अधिकारियों द्वारा त्वरित जांच कर नियमानुसार कार्यवाही सुनिश्चित की गई।

कम्पलेंट सेल के प्रभारी नितिन तेकाम ने बताया कि निर्वाचन में आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन से जुड़ी किसी भी प्रकार की सीधी शिकायत सी-विजिल ऐप के माध्यम से की जा सकती है। इसके लिए संबंधित नागरिक को गूगल प्ले स्टोर पर जाकर सी-विजिल ऐप डाउनलोड करना होगा। इसके लिए नागरिक को ऐसी किसी भी घटना की जानकारी होने पर फोटो या वीडियो सी-विजिल ऐप पर अपलोड करना होगा। शिकायत मिलने पर अगले 100 मिनट के भीतर कार्यवाही की जाएगी। उल्लेखनीय है कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा आदर्श चुनाव आचरण संहिता के उल्लंघन वाली शिकायतों के निवारण के लिए सी-विजिल ऐप तैयार किया गया है।

थाना बल्देवगढ़ पुलिस द्वारा 5000/- रुपये के ईनामी आरोपी को किया गया गिरफ्तार

राम सिंह यादव टीकमगढ़

पुलिस अधीक्षक , टीकमगढ रोहित काशवानी द्वारा फरारी, ईनामी, स्थाई वारंटीयो को गिरफ्तार करने हेतु निर्देशित किया गया है। इसी तारतम्य में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सीताराम एवं टीकमगढ़ श्री राहुल कटरे के मार्गदर्शन में थाना बल्देवगढ़ के अपराध क्रमांक 97/2023 के आरोपी मिथुन रजक निवासी ग्राम गुखरई आरोपी उक्त की गिरफ्तारी हेतु श्रीमान पुलिस अधीक्षक टीकमगढ के द्वारा 5000/- रूपये का ईनाम घोषित किया गया था। बल्देवगढ़ पुलिस द्वारा मुखबिर की सूचना पर मामले के फरार आरोपी मिथुन रजक को आगरा उत्तर प्रदेश से गिरफ्तार किया गया।

उक्त आरोपी को गिरफ्तार करने में थाना प्रभारी बल्देवगढ़ निरीक्षक मनोज सोनी, उप निरीक्षक मनोज यादव, उप निरीक्षक मयंक नगायच, प्रधान आरक्षक रहमान, आरक्षक नरेंद्र जाट, आरक्षक भागीरथ लोधी, अनुज शिखर की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

अंतर्राज्यीय चेकपोस्ट बिजौरी में 1 लाख 97 हजार 750 रुपये की हुई नगद जप्ती

अनूपपुर। भारत निर्वाचन आयोग के दिशा निर्देश अनुसार लोकसभा आम निर्वाचन 2024 को मद्देनजर जिले के विभिन्न सीमावर्ती क्षेत्रों तथा अंतर्राज्यीय मार्गों में कानून व्यवस्था को दृष्टिगत रखते हुए जांच नाकों की स्थापना की गई है। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी तथा शहडोल 12- (अजजा) लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र के रिटर्निंग ऑफिसर श्री आशीष वशिष्ठ के दिशानिर्देशानुसार चेकपोस्ट में तैनात दल द्वारा चौबिसों घण्टे आने-जाने वालो पर सख्त निगरानी रखी जा रही है।

छत्तीसगढ़ राज्य के सीमा में स्थित अंतर्राज्यीय चेकपोस्ट बिजौरी (पोडकी, गौरेला मार्ग) मे ग्राम पिपरिया अनूपपुर निवासी श्री संजय कुमार विश्वकर्मा पिता श्री राजकुमार विश्वकर्मा से 1 लाख 97 हजार 750 रुपये नगद जप्त किए गए हैं। संबंधित के पास से मौके पर पैसे के संबंध में कोई प्रमाण व वैध दस्तावेज नही मिलने पर कार्यवाही की गई है। यह कार्यवाही स्थैतिक निगरानी दल के कार्यपालिक मजिस्ट्रेट श्री कौशलेंद्र शंकर मिश्र के नेतृत्व में पुलिस उपनिरीक्षक श्री बी एल गोलियां व टीम द्वारा की गई। लोकसभा निर्वाचन की आदर्श आचरण संहिता के प्रभावी होने से जिले की सभी सीमाओं पर चेकपोस्ट पर लगातार निगरानी रखी जा रही है। जप्त की गई राशि को जिला कोषालय में जमा कराया गया है।

न्यायालय नायब तहसीलदार वृत्त फुनगा, तहसील व जिला अनूपपुर (म.प्र.)

[illegible]

अनूपपुर, दिनांक 21/02/2024

[illegible] ....आवेदक

बनाम

1. [illegible]

2. [illegible] ....अनावेदकगण

(अनावेदकों की तलबी हेतु सूचना पत्र)

[illegible]

आज दिनांक 21.02.2024 को [illegible] जारी किया गया।

नायब तहसीलदार
वृत्त-फुनगा
तहसील व जिला अनूपपुर म.प्र.

निर्धारित लक्ष्य 59.53 करोड से अधिक की वसूली

शत प्रतिशत वसूली में खनिज विभाग अग्रणी

उमरिया। जिले में खनिज विभाग द्वारा वित्तीय वर्ष 2023-24 में शासन द्वारा निर्धारित लक्ष्य से अधिक खनिज राजस्व की वसूली कलेक्टर धरणेन्द्र कुमार जैन के मार्गदर्शन में की गई है। उप संचालक खनिज फरहत जहां ने बताया कि शासन द्वारा जिले के लिए खनिज राजस्व की रायल्टी मद एवं मध्यप्रदेश ग्रामीण अवसंरचना मद मे कुल 59.53 करोड का लक्ष्य निर्धारित किया गया था।

निर्धारित लक्ष्य 59.53 करोड से अधिक की वसूली,शत प्रतिशत वसूली में खनिज विभाग अग्रणी जिले मे खनिज कोयले एवं अन्य गौण खनिजो की खदानो से प्राप्त राजस्व, विभिन्न विभागों द्वारा कराये गये निर्माण कार्यो मे उपयोगिता गौण खनिज की रायल्टी के साथ-साथ खनिज विभाग द्वारा खनिजों के अवैध उत्खनन, परिवहन एवं भण्डारण पर की गई कार्यवाही में किए गए अर्थदंड को मिलाकर खनिज राजस्व के निर्धारित लक्ष्य के विरूध्द 59.58 करोड रूपये का राजस्व वसूल किया गया। इस प्रकार जिले मे खनिज राजस्व के लक्ष्य के शत प्रतिशत से अधिक 100.08 प्रतिशत प्राप्ति की गई है। जिले मे साउथ ईस्टर्न कोल फील्डस के जोहिला क्षेत्र, पत्थर, गिटटी, मार्बल की खदानो का राजस्व प्राप्ति मे महत्वपूर्ण योगदान रहा। खनिज विभाग की टीम में सहायक खनि अधिकारी दिवाकर चतुर्वेदी एवं प्रभारी खनि निरीक्षक नर्बद सिंह आर्मो द्वारा वित्तीय वर्ष 2023-24 मे खनिजो के अवैध उत्खनन, परिवहन एवं भण्डारण पर लगातार कार्यवाही की गई जिसमें पुलिस विभाग का सहयोग समय-समय पर मिला है।

निर्धारित लक्ष्य 59.53 करोड सेजिले मे खनिज कोयले एवं अन्य गौण खनिजो की खदानो से प्राप्त राजस्व, विभिन्न विभागों द्वारा कराये गये निर्माण कार्यो मे उपयोगिता गौण खनिज की रायल्टी के साथ-साथ खनिज विभाग द्वारा खनिजों के अवैध उत्खनन, परिवहन एवं भण्डारण पर की गई कार्यवाही में किए गए अर्थदंड को मिलाकर खनिज राजस्व के निर्धारित लक्ष्य के विरूध्द 59.58 करोड रूपये का राजस्व वसूल किया गया। इस प्रकार जिले मे खनिज राजस्व के लक्ष्य के शत प्रतिशत से अधिक 100.08 प्रतिशत प्राप्ति की गई है। निर्धारित लक्ष्य 59.53 करोड से अधिक की वसूली,शत प्रतिशत वसूली में खनिज विभाग अग्रणी जिले मे साउथ ईस्टर्न कोल फील्डस के जोहिला

सूचना

सर्वँसाधारण को सूचित किया जाता है कि श्रीमती योगिता पति आशिवनी सूर्यवंशी निवासी इंदौर मध्य प्रदेश के मालिकाना एव आधिपत्य का मकान भूखंड क्रमांक 1183 पैकि भाग क्रमांक,ए द्वारकापूरी कॉलोनी, इंदौर,मध्य प्रदेश जिसका कुल क्षेत्रफल 600 वर्गफीट है! जिसका विक्रय सौदा ना तो हुआ है ना ही विक्रय किसी के साथ किया गया है और ना ही किसी प्रकार से किसी ने इसे खरीदा है ,यह जमीन श्रीमती योगिता सूर्यवंशी के नाम पर है!

श्रीमती योगिता पति अशिवनी सूर्यवंशी इंदौर
9993495555

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक डल्लू सोनी द्वारा सांई प्रिंटिस म. नं 19 जिंसी जहांगीराबाद, भोपाल,मप्र, मुद्रित एवं मजिस्ट्रेट बंगला वार्ड नं 9 , जिला अनूपपुर मध्यप्रदेश से प्रकाशित। संवादक-डल्लू सोनी, समाचार चयन के लिए पीआरबी एक्ट के तहत जिम्मेदार/न्यायालनी क्षेत्र अधिकार अनूपपुर होगा। मो -9893798715